दुखी दुनिया

अथवा

प्रलय-प्रतीक्षा

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

प्रकाशक
जीतमल लूणिया
सस्ता-साहित्य मंडल अजमेर

प्रथमबार, २००० | मूल्य ॥)

मुद्रक
जीतमल लूणिया
सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर

यह संग्रह मैंने मूल अंग्रेजी में पढ़ा है। श्री चक्रवर्ती [illegible] की लेखनी में शक्ति है, क्योंकि उसमें अनुभव और भावना है। ये सब [illegible] हिन्दी जनता के सामने रखकर सस्ता-साहित्य-मण्डल ने उपकार किया है। पाठकों को यह जान लेना आवश्यक है कि यद्यपि ये हैं तो कहानियाँ पर वस्तुतः इनमें वर्णित घटनायें सब सच्ची ही हैं।

मेरठ
१८-१०-२९

गांधी

मूक वेदना

ऊपर से सुखी दिखाई देने वाली इस दुनिया के पीछे एक दूसरी बहुत बड़ी-दुनिया है। वह दुःखी है—बहुत दुःखी है। देश का सारा वायु-मण्डल उसकी लपटों से गरम हो रहा है। मनुष्य अपने भाई से ही कैसा पशुवत् व्यवहार करता है! कैसा घोर दारिद्र्य देश फैला हुआ है। दुःख का सागर उमड़ रहा है। मानों लय-काल सन्निकट है। मनुष्य प्राणी ने ऐसे दुःखी जीवन

का कहीं अधिक समय तक बरदाश्त नहीं किया है। और देशों में भी ऐसी परिस्थिति जब उत्पन्न हुई है, तब वहाँ की मनुष्यता ने उसके विरुद्ध बलवा किया है। भारत में भी वह समय आ रहा है।

पूज्य आचार्यजी की कहानियाँ भारत की उस पीड़ित मानवता की मूक वेदना को वाणी प्रदान कर देती हैं। हम आशा करते हैं कि इन्हें पढ़कर उस मंगल क्रान्ति का स्वागत करने की भावना देश के युवकों में जागे और वे पीड़ित मानवता की सेवा के लिए दौड़ पड़ें।

प्रकाशक

प्रलय-प्रतीक्षा

काहे का ताना, काहे का बाना....!

"यह अच्छे कपड़े की माँग बड़ी वाहियात है" पार्थसारथी ने कहा। "हाथ का बुना आखिर को फिर हाथ का बना ही तो है। उसमें मानव जीवन के दुःख और सुख की जो कहानी मिली हुई है। उसे हम पृथक् नहीं कर सकते। एक दिन जुलाहा प्रसन्न है। उसके हाथ-पाँव आँखें सब ठीक-ठीक काम करते हैं। दूसरे दिन उसे दुःख है। तीसरे दिन उसे कोई दैवी प्रकोप आ घेरता है। परन्तु काम से छुट्टी ले लेने की उसकी परिस्थति नहीं है। कभी उसके पास अवकाश होता है, कभी वह बड़ी जल्दी में होता है। आखिर आदमी मशीन तो है ही नहीं, कि हमेशा एक-सा हाथ पाँव चलता रहे।"

?

१—काहे का ताना काहे का बाना ....

२—हेट्स और साड़ियाँ

३—अन्धी लड़की

४—अभागिनी !

५—प्रायश्चित्त

पार्थसारथी एक सुशील और उत्साही युवक था। तामिल प्रदेश के एक दूरवर्ती कोने में राजनैतिक झंझटों से दूर रहकर खादी का काम करता था। वह अभी कुँवारा ही था। उसकी माँ उसके साथ रहती थी। कालीयूर ग्राम और उसके इधर-उधर के नगलों में वह यह काम करता था। ग़रीब मनुष्यों से और स्त्रियों से—हां, विशेषतः स्त्रियों से—गान्धीजी के

बारे में वह बातें किया करता था। उसने उन्हें चरखे का सन्देश सुनाया और समझाया कि उसकी सहायता से वे अपना पेट खुद भर सकती हैं। उनके उजड़े जीवन-बन में आशा-लता लहलहाने लगी। कोठों और अटारियों पर से पुराने चरखे उतरे और कालीयूर तथा उसके आस-पास के गांव चरखों की मधुर संगीत से गूँजने लगे। ग्राम का बढ़ई नये-नये चरखे बनाने लगा। बढ़ई किसानों की स्त्रियों से पूछता फिरता था 'किसी को नया चरखा बनावना है?' पुराने की मरम्मत करवाना है?" यह पूछते समय उसका मुरझाया हुआ चेहरा एक दम खिल उठता। स्त्रियाँ सिर पर ताड़ के पत्रों की सुन्दर टोकरियों में सूत रक्खे खेतों में होकर कालीयूर के 'गान्धी भण्डार' की ओर जाती हुई दिखाई देती थी। मानों वे भारत की दरिद्रता की मूर्ति थीं। बदन पर पूरे कपड़े भी न थे। उनका आधा शरीर नंगा ही था और कई तो कमर में एक कपड़ा लपेट कर किसी तरह अपनी लाज की रक्षा कर रही थीं।

ऐसी स्त्रियों की भीड़ की भीड़ कालीयूर 'गान्धी भण्डार पर इकट्ठी होती थी। कोई अपना सूत उलट-पुलट

कर देखती थीं; कोई सूत की आँटियों लच्छियों को साफ और चिकना करके रखती थीं; कोई अपनी डलियों में रूई दबा-दबाकर भरती थी और कोई बैठ कर अपनी गाढ़ी कमाई के पैसों को ही बार-बार संतोष भरी आंखों से गिनती थीं। ये स्त्रियां अपने घर के काम काज से समय बचा-बचाकर कताई का काम करती थीं।

पुरुषों को अपने गृहस्थ-जीवन में परिवर्तन देखकर आनन्द होता था। उनकी स्त्रियाँ जो थोड़े बहुत पैसे कालीयूर के 'गांधी भण्डार' से लाती थीं उन्हें पाकर वे बहुत खुश होते थे। क्योंकि पेंठ के दिन यह पैसे बड़े काम आते थे।

× × ×

तीन वर्ष से लगातार फसलें ख़राब हो रहीं थी। गाँव वाले सिर खुजलाते थे; बहुत सोचते थे; परन्तु कोई रास्ता नजर नहीं आता था। बहुत से किसान निराश हो फिजी इत्यादि उपनिवेशों में जाकर मज़दूरी करके पेट भरने का विचार करने लगे थे। आरकाटियों ने आकर अपना धन्धा अच्छी तरह शुरू कर दिया था। इसी समय

पार्थसारथी ने आकर कालीयूर में अपना खादी-केन्द्र स्थापित किया।

पार्थसारथी ने कालिज कैसे छोड़ा? कैसे उस से दुखित होकर उस आघात के कारण उसके पिताजी की मौत हो गई, उसी प्रकार पार्थसारथी की माता का दुःख और फिर उसको कैसे सन्तोष मिला तथा पार्थसारथी कालीयुर कैसे आया आदि आदि बड़ी लम्बी कहानी है। वह फिर कभी मौके से आपको सुनावेंगे।

× × ×

बूढ़े ने गायें खोलते हुए कहा, "पावाई, मैं जानवरों की देखभाल कर लूँगा। जा, तू सूत कात। शनिवार के दो ही दिन रह गये हैं।" शनिवार के दिन पार्थसारथी इस ग्राम का कांता हुआ सूत लिया करता था।

पावाई ने कहा "बहुत अच्छा।" उसके बच्चे की आखें आ रही थीं और वह रो रहा था। इसलिए पावाई को अनायास घर ही पर रहने का मौका मिल जाने से बड़ी खुशी हुई। वह अपने झोंपड़े के सामने आँगन में चरखा

निकालकर ले आई और अपनी पिढ़िया और पूनियों की डलिया ठीक ठाक करके बैठ गई।

अड़ोस-पड़ोस के किसानों के यहां भी यही होता था। पुरुष खेतों पर और घरों में अधिक काम करने लगे और स्त्रियाँ—जवान और बूढ़ी सब—सूत कातती रहतीं। वर्षों के बाद बुढ़ियों को जवानों से होड़ करने और उन्हें हराने का मौका हाथ आया था। जब जवान स्त्रियाँ मोटा झोटा सूत कातकर लाती थीं तब बुढ़िया ठट्ठे लगातीं और उनका खूब मज़ाक उड़ाती थीं। आँखों की ज्योति कम हो गई थी। हाथ कांपते थे। मगर फिर भी बुढ़िया बड़ी आसानी से सुंदर सूत कातकर ले आती थीं। जवानों को नई चीज़ सीखने में काफ़ी दिक्कत होती थी। परन्तु कुछ ही दिन में सब को अच्छा सूत कातना आ गया और जवानों के सूत में दिन पर दिन उन्नति होती देखकर पार्थसारथी का हृदय आनन्द से फूलने लगा।

"जवानों को सीखने में कुछ भी समय नहीं लगता" उसने अपने विश्वस्त मित्र और साथी कार्य्यकर्ता सुब्रह्मण्यम् से कहा।

सुब्रह्मण्यम् मुरझाती हुई बुढ़ियों पर फ़रेफ्ता था। छोकरियों के बुरे सूत पर कड़ी दृष्टि रखता और उनको कम मज़दूरी देता। "जुलाहे ऐसा सूत नहीं ले सकते। इस सूत का टाट की तरह कपड़ा बनेगा" उसने कहा।

"कुछ ही समय में सब की सब ठीक काम करने लगेंगी। ज़रा इसको अब तो देखो" पार्थसारथी ने हाल की जाँची हुई लटी फेंककर कहा।

जैसे-जैसे दिन गुज़रने लगे अधिकाधिक सूत आने लगा। भण्डार की मिट्टी की कलई की हुई सफेद दीवार के सहारे हाथ के कते हुए सफेद सूत का ढेर दिन पर दिन बढ़ता देखकर पार्थसारथी और उसके साथी कार्य्य-कर्त्ताओं का छोटा झुण्ड बहुत खुश होता था।

कालीयूर में सूत की पैदावार बढ़ती गई। अब की बार भी वर्षा नहीं हुई। नदी नालों यहाँ तक कि कुओं तक का पानी सूख गया। किसान हताश हो गये। उनको कोई उपाय नहीं सूझता था। परन्तु स्त्रियों के पास सोचने अथवा बहस करने का समय नहीं था। वे सारे दिन चरखे पर सूत कातती थीं। चाँदनी रातें भी चरखे पर बीतती थीं।

पार्थसारथी के छोटे से भण्डार को अपना व्यापार सम्भालना मुशकिल हो गया। उसके रूई के बोरे ऐसे गायब होने लगे जैसे सूर्य्य के सामने से अन्धकार। कते हुए सूत के बण्डल जल्दी-जल्दी आने लगे, यहाँ तक कि रखने के लिए जगह की भी कमी पड़ने लगी। पार्थसारथी के मित्र गाँव के मुखिया ने पार्थसारथी को सूत जमा करने के लिए एक खाली झोंपड़ा दिलवा दिया। परन्तु पार्थसारथी के लिए जितनी जल्दी-जल्दी सूत आता था, उतनी जल्दी-जल्दी कपड़ा बुनवा लेना अथवा तैयार किया हुआ कपड़ा बेच डालना मुश्किल हो गया। उत्तर प्रदेश में रहने वाले उसने अपने पुराने मित्रों को लिखा कि 'भाई मेरी सहायता करो।' इनमें से कुछ ने उसकी टेर सुनी और उन्होंने अपने-अपने मित्रों को लिखा। अन्त में बम्बई के खादी राजा जेराजानी से यह बात तय पाई कि वे कालीयूर का तैयार किया हुआ माल बराबर लेते रहेंगे। तब चारों ओर के ग्रामों में कार्य्य फैल गया और किसानों के झोंपड़े जीवन की ज्योति से जगमगा उठे। मुर्झाया हुआ कालीयूर मुसकरा उठा। दूर-दूर के ग्रामों से झुण्ड के झुण्ड

दर्शक कालीयूर में होने वाले अचम्भे को देखने के लिए आने लगे।

× × ×

"आपका कपड़ा अच्छा है परन्तु वह और भी अच्छा बन सकता है। क्या आप उसमें कुछ तार और नहीं मिला सकते? अगर आप कुछ अधिक तार मिलाकर कपड़ा बनावें तो हम आपका माल अधिक आसानी से बेच सकते हैं।" एक दिन बम्बई के खादी राजा ने पार्थसारथी को लिखा। पार्थसारथी पत्र पढ़ कर मुसकराया। उसने सोचा कि 'जेराजानी के पास शायद माल अधिक इकट्ठा हो गया है। इसीलिए वह अब कपड़े के गुण-दोष ढूँढने की तरफ़ झुके हैं।'

पार्थसारथी ने अपने जुलाहों से कहा और उन्हें बारीक कपड़ा बुनने पर राज़ी किया। जेराजानी ने लिखा कि 'कपड़े में निःसन्देह उन्नति हुई है' और उन्होंने पार्थसारथी के प्रयत्न की तारीफ़ भी की।

परन्तु कुछ दिन बाद एक दूसरा पत्र आया—

"आपका सूत तो निसन्देह बारीक होता है। हमारे

ग्राहकों को इससे बहुत कुछ सन्तोष भी हुआ है। परन्तु हम देखते हैं कि सब थान एकसे नहीं होते। अपनी बुनाई पर आपको अधिक कड़ी देख-रेख रखनी चाहिए।" शहरी सौदागर ने लिखा। स्पष्ट है, बम्बई के बाजार में फिर सुस्ती आ गई थी।

"ऐसे काम नहीं चलेगा" सुब्रह्मण्यम् ने अधीर हो कर कहा; "यह आदमी हम लोगों से बेजा फ़ायदा उठाना चाहता है"

"नहीं" पार्थसारथी ने कहा। "उन्हें अपने ग्राहकों को सन्तुष्ट रखना ही चाहिए नहीं तो वह अपना माल कैसे बेच सकते हैं और कैसे हमारी सहायता कर सकते हैं?"

पार्थसारथी जुलाहों और कोलियों से सख्ती करने लगा। गुरुवार का दिन उसने जुलाहों के लिए तैयार किया हुआ माल लाने के लिए नियत किया था। अब वह प्रत्येक गुरुवार के दिन जाकर हरएक थान को मेहनत से स्वयं देखने लगा और जुलाहों को उनकी त्रुटियाँ समझाने लगा। एक दो सप्ताह के बाद वह अच्छे माल पर इतना ज़ोर देने लगा कि उसने सब को सूचना दे दी कि अगर माल

एक खास क़िस्म से खराब होगा, तो उसके दाम कम दिये जाँयगे।

जुलाहों को यह बात अच्छी न लगी। कुछ तो इतने बिगड़े कि अपना हिसाब-किताब साफ़ करके अपने पुराने मालिकों—मिलों के सूत का माल बनवाने वालों के पास चले गये। परन्तु अधिकतर ने सोचा कि जिनसे हम एक बार लड़ चुके हैं, उनके पास फिर लौट कर जाना अपमान-जनक है। ऐसा करने से आर्थिक हानि होने की भी सम्भावना है।" पार्थसारथी अपना काम चलाता रहा।

"क्या हमारे माल से अब आपको सन्तोष है ?" पार्थसारथी ने एक पत्र बम्बई को लिखकर पूछा। इस नये ढंग से इसने बम्बई वालों को अपनी याद दिलाई। क्योंकि बम्बई से पहिले की तरह जल्द-जल्द माँग आना बन्द हो गई थी।

कुछ दिन ठहरकर एक जवाब आया। "कपड़ा आपका साधारणतया अब अच्छा होता है। हमें प्रसन्नता है कि आप कपड़े की बुनाई पर अब अधिक ध्यान देते

हैं। परन्तु अब भी बहुत कुछ कमी है। हमारे ग्राहक मिल का सा महीन कपड़ा चाहते हैं और हम उनको सन्तोष देने पर बाध्य हैं। हमें आपके कार्य्य में सहायता करने में बड़ी प्रसन्नता होती है। परन्तु आपको ध्यान रखना चाहिए कि जब तक आपका माल बाज़ार में बिकने के काबिल न हो, तब तक हम आपकी सहायता नहीं कर सकते।"

पार्थसारथी बेचारा जैसे बना, काम चलाता रहा। जब जुलाहे कपड़ा बुनकर लाते थे, तो वह ऊपरी क्रोध से काम लेता था। उसका हृदय मुँह को आता था परन्तु उसे कठोरता से काम लेना पड़ता था।

"क्यों यह क्या है?" वह थान खोलकर कहता था, "यह जरासा धब्बा क्यों है? यह यहाँ पर मोटा-पतला धागा क्यों है?"

"अब की बार अच्छा लावेंगे" ग्राम के जुलाहों का हमेशा यही छोटा सा नम्र उत्तर होता था। समालोचना का उनपर अधिक असर न होता था।

"यों काम नहीं चलेगा। इस थान की मज़दूरी में से मैं चार आना काट लूँगा।"

"राम रे! ऐसा मत करिए साहब! मेरा पेट मत काटिए!" जुलाहा रोने लगा। फिर आधे घण्टे तक एक तरफ़ खुशामद, गिड़गिड़ाहट, "हाँ, हाँ" और दूसरी ओर दिखावटी कठोरता में द्वन्द्वयुद्ध होता रहा। बहुत सा समय बरबाद हुआ। परन्तु बम्बई के ग्राहकों के लिए, जो मिल के कपड़े की तरह बारीक खादी मांगते थे, अच्छा माल तैयार करवाने का और कोई मार्ग ही नहीं था।

"भाई, इस प्रकार काम नहीं चल सकता। हम लोगों को अपना माल यहीं के बाज़ार में बेच देना चाहिए।" पार्थसारथी ने एक दिन सुब्रह्मण्यम् से कहा।

सुब्रह्मण्यम् मुस्करा कर बोला, यह लोग इस जन्म में तो क्या, अगले जन्म में भी खादी की एक धोती के लिए एक रुपया छः आना कभी न देंगे क्योंकि उतने ही दाम में उन्हें मिल की बनी हुई दो सुन्दर धोतियाँ मिल जाती हैं।"

"यह ठीक है। परन्तु फिर भी हम लोगों को प्रयत्न तो करना ही चाहिए। अड़ोस-पड़ोस में जहां जहां हाट लगते हैं उनमें चलना चाहिए। बम्बई के इन शौकीन

लोगों की गुलामी हम लोग नहीं कर सकते। इन्हें तो खुश करना असम्भव है।" पार्थसारथी ने कहा।

× × ×

"कैसा भद्दा जोड़ लगाया है? यह मच्छरदानी बनाई है या कपड़ा मैं इस कपड़े के कुछ भी दाम नहीं दे सकता। ले जाओ इसे, तुम्हीं अपने किसी काम में ले लेना।

"राम रे! मैं इसे अपने किस काम में ला सकता हूँ?"

"सुब्रह्मण्यम्! इस आदमी से कह दो कि हम ऐसा माल नहीं ले सकते अपने कपड़े को उठाकर घर ले जाय, कहीं और बेच डाले अथवा जो चाहे सो करे, मुझे और लोगों का माल देखना है। इससे ज्यादा बातचीत करने का समय नहीं है।"

पलनिमुत्तु (जुलाहा) जिसका थान पार्थसारथी ने लेने से इन्कार कर दिया था, स्तब्ध खड़ा था। उसने देखा कि अब की बार पार्थसारथी सचमुच क्रोध में हैं। पार्थसारथी ने पहले कई बार प्रयत्न किया था, परन्तु उसकी धमकियाँ और उसके शब्द गरीब जुलाहों के हृदय में भय पैदा नहीं करते थे। दया हृदय में छिपाकर रखना बड़ा

मुश्किल है। पार्थसारथी के शब्द और स्वर कितने ही कठोर होते थे, परन्तु दरिद्रता की तीव्र दृष्टि कठोरता के पीछे छिपी हुई दया को देख ही लेती थी। परन्तु अब की बार पार्थसारथी सचमुच ही कठोर हो गया था।

"क्यों खड़े हो? मैं माफ़ नहीं कर सकता। कपड़ा बहुत बुरा है, भाग जाओ।" पार्थसारथी ने गुस्से से कपड़ा फैंककर कहा। और दूसरे मनुष्य का माल देखने लगा।

"हजूर......" पलनिमुत्तु ने प्रारम्भ किया।

"नहीं" पार्थसारथी ने झिड़ककर कहा।

"मेरा लड़का इसी सप्ताह मर गया" जुलाहा बोला। पार्थसारथी ने मुँह उठाकर जुलाहे की ओर देखा। उसके मुँह पर लज्जा आ गई।

"और उसकी माँ बीमार है" जुलाहा कहता रहा। "भगवान् जाने उसके भाग्य में क्या लिखा है। मेरे घर पर शनीचर बिराज रहे हैं। मेरा मन बड़ा दुखी था। केवल पापी पेट के लिए करघे पर बैठा-बैठा काम करता रहा। हाथ करघे पर थे परन्तु मन कहीं और था। अब

की बार माफ़ कर दो, सरकार। आज तक कभी आपको मेरे माल से असन्तोष नहीं हुआ है।"

"इन सब कारणों को सुनकर मैं क्या करूँ?" पार्थसारथी ने कहा। परन्तु पहिले से अधिक नम्र स्वर में कहा—"ऐसे माल को लेकर मैं क्या करूँगा? तुम्हारे कारण मैं ग्राहकों को नहीं सुना सकता।"

"अब की बार माफ़ कर दो, सरकार" पलनि ने गिड़गिड़ा कर कहा।

"नहीं, मैं इस थान को नहीं ले सकता। अपने घर ले जाओ।" पार्थसारथी ने दृढ़ता से कहा।

"मैं मर जाऊँगा, सरकार। मेरे बच्चे हफ्ते भर भूखों मरेंगे।" गरीब जुलाहा रोकर कहने लगा और ज़मीन पर पेट के बल लेटकर उसने अपना सिर पार्थसारथी के पैरों पर रख दिया।

"सुब्रह्मण्यम्, दे दो इस आदमी को दाम। परन्तु अब आगे मैं ऐसे बहाने हरगिज़ नहीं सुनूँगा। तुम्हारा लड़का कितना बड़ा था?"

"सत्रह बरस का पट्ठा था, हुज़ूर। बड़ी मुश्किल से

पाल पोस कर बड़ा किया था। सोचा था बुढ़ापे में काम आयगा। परन्तु जब वह करघे पर बैठ कर मुझे सहायता देने के योग्य हुआ, तभी भगवान् ने उसे उठा लिया।"

शेष कार्य्य शान्ति से हुआ। पार्थसारथी ने और किसी जुलाहे के थान में मीनमेख नहीं निकाली। उसे बड़ा दुःख हो रहा था, जिस प्रकार हम सब को होता है जब कि हम कोई ऐसी गलती कर बैठते हैं जिसके लिए हमें पश्चात्ताप तो होता है, परन्तु जिसकी याद ही हमें असहनीय होती है। खाना खाते समय भी उसके मन की यही दशा रही। माँ ने चुपचाप खाना परोस दिया और वह खाकर उठ गया।

रात को भी उसे बहुत कम नींद आई। दूसरे दिन प्रातःकाल ही वह उठा और बिस्तरे में बैठे-बैठे ही चुपचाप प्रार्थना करके उसने अपना मन शान्त किया। तब उसके चेहरे पर आनन्द और उत्साह की आभा चमक उठी। उसकी माता और सुब्रह्मण्यम् यह देख कर बड़े प्रसन्न हुए।

× × × ×

"यह अच्छे कपड़े की माँग बड़ी वाहियात है" पार्थसारथी ने कहा। "हाथ का बुना आखिर को फिर हाथ का बना ही तो है। उसमें मानव-जीवन के दुःख और सुख की जो कहानी मिली हुई है। उसे हम पृथक नहीं कर सकते। एक दिन जुलाहा प्रसन्न है। उसके हाथ पाँव आँखें सब ठीक-ठीक काम करते हैं। दूसरे दिन उसे दुःख है। तीसरे दिन उसे कोई दैवी प्रकोप आ घेरता है। परन्तु काम से छुट्टी ले लेने की उसकी परिस्थिति नहीं है। कभी उसके पास अवकाश होता है, कभी वह बड़ी जल्दी में होता है। आखिर आदमी मशीन तो है ही नहीं, कि हमेशा एक-सा हाथ पाँव चलाता रहे।"

सुब्रह्मण्यम् कारीगरी के दाँव-पेंचों से हमेशा ही भरा रहता था। उसने पार्थसारथी के कथन का अभिप्राय अपने ढँग में निकाला। वह बोला—"बिलकुल ठीक है। कितना ही प्रयत्न किया जाय, कपड़ा कभी एक-सा नहीं हो सकता। कहीं जरासा पतला सूत आ गया कि मालूम होता कपड़ा झिर-झिरा है। इसका कुछ इलाज ही नहीं है हमेशा ही जुलाहों की गलती नहीं होती।"

"हाँ, हम लोगों को इन बम्बई वालों से कह देना चाहिए कि उनको करघों और चरखों से मिल के कपड़े की आशा नहीं रखनी चाहिए। करघे आखिर करघे हैं और चरखे आखिर चरखे ही।

"हाँ" सुब्रह्मण्यम् बोला और "उनको यह भी समझ लेना चाहिए कि गान्धीजी ने यहाँ कालीयूर में कोई मिलें नहीं खड़ी की हैं, जहाँ से वे बिना पूंजी लगाये और मिलें खड़ी किये मजे से कपड़ा मँगा सकें।"

"ठीक है। गान्धीजी ने एक घरेलू उद्योग खड़ा किया है, और उससे सैकड़ों हज़ारों स्त्री-पुरुषों को पेट की ज्वालाओं में भस्म होने से बचाया है। फैशन और शौक़ को चाहिए कि चिकने सुथरे कपड़ों में सौन्दर्य न देखकर ग़रीबों को रोटियाँ देने में सौन्दर्य्य देखें।"

इस प्रकार हाथ के कते बुने कपड़े के मानस शास्त्र पर बातें हो ही रही थीं कि इतने में एक बुढ़िया लपकती हुई आई और पार्थसारथी के पैरों पर पैसे फेंक कर सिसकियाँ लेकर एकदम फूटफूट कर रोने लगी।

"क्यों, क्या है?" पार्थ-सारथी ने मुस्करा कर पूछा।

वह जानता था कि यह कातने वाली प्रायः ज़रा-ज़रा-सी बात पर रो उठती है।

"यह अपने पैसे वापिस लेलीजिए। मैंने अपनी एक मात्र औलाद अपनी विधवा पुत्री—अपने सर्वस्व को डायन बन कर चिता में रख दिया। अब मैं अभागी बूढ़ी जीकर क्या करूँगी? मुझे जीकर करना ही क्या है।?" बुढ़िया रोने लगी।

"लेकिन बात आखिर क्या है?" पार्थसारथी ने फिर पूछा।

"मुझे मरने दीजिए। अपने पैसे वापिस ले लीजिए। मुझे आप के पैसे नहीं चाहिए।"

"क्यों बेवकूफी की बात करती हो? ज़रा रोना बन्द करके मुझे बता कि आखिर तुम्हें क्या चाहिए?" पार्थसारथी ने प्रेम पूर्वक पूछा।

रामकृष्णय्या तो कहते हैं कि अबकी बार मेरा सूत मोटा है। एक-सा नहीं है। उन्होंने मेरी मजदूरी मेंसे एक आना काट लिया है। गाँव भर में मैं सबसे अच्छा सूत कातती हूँ। मैं हमेशा अपनी छोकरी से भी कहती

हूँ कि उसे औरों की तरह सूत नहीं कातना चाहिए। ध्यान देकर अच्छा सूत कातना चाहिए। हमारा सूत हमेशा सोने के तार की तरह होता था। जिन्हें सूत की परख है उनसे पूछ लीजिए।" यह कहकर वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी सिसकियों के वेग ने उसके शब्द प्रवाह को रोक दिया।

सुब्रह्मण्यम् ने बुढ़िया को शान्त करने की चेष्टा की और कहा कि अच्छे सूत के लिए हमेशा अच्छी मजदूरी मिलती है बुरे सूत के कम दाम मिलने ही चाहिए। मोटे सूत से जुलाहे अच्छा सूत नहीं बुन सकते। कल ही वे लोग झींक रहे थे।

"अपने पैसे वापिस ले लीजिए। मेरी लड़की—मेरे बुढ़ापे का सहारा—जो मुझ अभागी का इस कठोर दुनिया में साथ देती थी, परसों एक दिन के बुखार से चल बसी भगवान ने मुझे नहीं बुलाया और न बिना खाये पिये जीवित रहने का मार्ग दिखाया। पापी पेट की आग बुझाने के लिए कुछ सहारा हो जायगा इसी विचार से रोती-रोती भी मैं कातती रही कि हफ्ते भर का सूत किसी न किसी

तरह पूरा हो जाय। मेरे दुर्भाग्य के कारण ध्यान बट जाने से सूत कुछ मोटा हो गया।

"क्या एक अभागी बुढ़िया के प्रति तुम्हारा यह व्यवहार ठीक है। मैंने ईसाई से उधार लिया। भला हो उसका उसने मेरी उस समय सहायता की जब कि मेरी लड़की की लाश घर में पड़ी थी और मेरी हँड़िया में एक पैसा नहीं था।

"पिछली पैंठ पर मैंने सब पैसों का बाजरा खरीद लिया था। एक पाख में मुझे ईसाई का एक रुपया वापिस देदेना होगा। तुम मुझे उस सूत के लिए जो मैंने रो-रो कर बड़ी मुश्किल से काता है एक आना कम देते हो! अगले सप्ताह में तुम दो आना काट लोगे? मैं कैसे तो अपना कर्ज़ा दे सकूंगी और कहाँ से पेट भरने को सत्तू पाऊँगी? मुझे यहीं मरने दो।"

"सुब्रह्मएयम्" पार्थसारथी ने कहा—"जाओ राम-कृष्णाय्या से कहना कि इस स्त्री को पूरे दाम दे-दे। इसको कुछ पेशगी भी क्यों न दे दो? मुत्तम्मा जा तुझे पूरे दाम मिल जावेंगे। रो मत।"

बुढ़िया पैसे उठाकर चल दी।

"समस्यायें कैसे हल होंगी ?" पार्थसारथी अर्ध-स्वर में सोचता हुआ अपनी माँ को पानी खींच देने के लिए कुए की तरफ बढ़ा।

"हे भगवान्, कैसी दशा है ?" पार्थ-सारथी की माँ बोली। वह हाथ में घड़ा लिये कुँए पर खड़ी हुई मुत्तम्मा की सारी बातें सुन रही थी।

हॅट्स् और साड़ियां

"मैंने पूछा 'क्यों भाई, बारिश-वारिश तो अच्छी रही ?' सब के सब एकदम से बोल उठे 'जी नहीं' और मेरी ओर आश्चर्य तथा कुतूहल भरी नजर से देखने लगे, जैसा कि अक्सर किसान देखते हैं। इतने ही में एक बूढा आदमी मेरे नजदीक आकर धीमी आवाज से गम्भीरता पूर्वक बोला—'हुजूर, बारिश कैसे हो ? जब भले-भले ब्राह्मण के घर की औरतें भी गोरों के साथ भागने लग जायं ?'
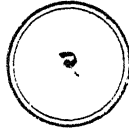
You must get ready by two my darling. The dinner is at five in the evening and we have to make fifty two miles.

(प्रिये ! चलो, जल्दी करो । दो बजे के भीतर-भीतर तैयार हो जाओ, भोज शाम के पांच बजे है और हमें ५२ मील चलकर जाना है ।)

मिस्टर कौशिक आई. सी. एस. पर्वतीपुर डिविजन के एक युवक असिस्टेण्ट कलेक्टर थे । डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर

मिस्टर मोबरली आज एक भोज देने वाले थे, जिसमें मिस्टर तथा मिसेज कौशिक भी निमन्त्रित थीं।

मि. कौशिक ने तो जानबूझ कर तमाम हिन्दू अन्ध-विश्वासों को अपने घर से विदा कर दिया। किन्तु उनकी माता एक कट्टर धार्मिक महिला थीं। उन्होंने इस बात पर बड़ा जोर दिया कि उनके पति का वार्षिक श्राद्ध जरूर होना चाहिए। पर्वतीपुर के ब्राह्मण-पुरोहितों के हाथ एक बड़ा अच्छा मौका लगा। खास कर जब उन्हें यह मालूम हुआ कि मिस्टर कौशिक श्राद्ध वगैरा की झंझट में खुद नहीं पड़ेंगे, बल्कि वे अपने स्थान पर किसी ब्राह्मण की योजना करने वाले हैं, तब तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने खूब कड़ी दक्षिणा मांगी और उस पर तुल गये। मिस्टर कौशिक जहां से तब्दील होकर यहां आये थे, वह स्थान दक्षिणा के लिहाज से इतना महंगा नहीं था। पर पर्वती-पुर तो कट्टरों का केन्द्र था। यहां जाति-नियमों के भंग पर कड़ा कर देना पड़ता था। पर मिस्टर कौशिक को पैसे-वैसे की कोई परवा नहीं थी। वे तो इस बात पर झुंझला रहे थे कि यह 'श्राद्ध' उसी दिन आस्मान से क्यों टपक

पड़ा, जिस दिन कलेक्टर ने उन्हें पहले पहल ही अपने यहां भोज के लिए निमन्त्रित किया था ! उन्होंने ब्राह्मणों से डपटकर कह दिया कि 'देखो, यह सब जल्दी खतम कर देना, आज दो पहर बाद मुझे कलेक्टर सा:ब के यहां किसी जरूरी काम से जाना है।' ब्राह्मणों को क्या था ? देने लेने की बातें तय होते ही ब्राह्मण एकदम उदार बन गये। उन्होंने तमाम आवश्यक बातें छोड़कर डाक गाड़ी की गति से अपना काम जल्दी समाप्त करने का वचन देकर मि. कौशिक को निश्चिन्त कर दिया।

× × ×

दो बज चुके थे। पति के श्राद्ध को इतनी जल्दी-जल्दी और लापरवाही के साथ करते देखकर वृद्धा को बड़ा दुःख हुआ। पर अपने बहू-बेटे पर उसका असीम प्यार था।

बहू के बाल संवारते-संवारते वह बोली—"बेटी मैं मर जाऊँगी तब तो गोपालकृष्णन् इतना भी न करेगा।"

मि. कौशिक का सच्चा नाम गोपालकृष्णन् अय्यर था। पर ऑक्स्फर्ड पहुँचने पर उन्हें यह बेहद लम्बा

मालूम होने लगा। इस लिए उन्होंने अपना नाम गोत्रा-नुसार बना लिया। और यह सुधरी हुई अंगरेजी शैली से कुछ मिलता-जुलता भी था। तब से वे मि. कौशिक बन गये।

वृद्धा ने अपनी बहू के सिर पर सिंदूर का तिलक लगाया, उसकी वेणी में ताजे फूलों की एक माला रक्खी, और एक बार उसकी ओर वात्सल्य भरी कलापूर्ण नजर से देखा कि सब ठीक तो है। जब उसे सन्तोष हो गया तब कहा 'हां, अब जाओ बेटी।'

"Are you ready darling" (प्रिये! क्या तुम तैयार हो गईं?) कहकर मि. कौशिक अपनी ड्रेसिंग रूम से चिल्लाये। मि. कौशिक पत्नी से अक्सर अंगरेजी में ही बातचीत करते थे। क्योंकि वे इन बेहूदी हिन्दुस्तानी भाषाओं में अपनी पत्नी को 'डार्लिंग' 'डियर' आदि शब्दों से सम्बोधित नहीं कर सकते थे।

'जी हां, यह लीजिए मैं आगई' कहकर पूरी तरह सज-धजकर मिसेज कौशिक ने अपने पति के कमरे में हंसते हुए प्रवेश किया। वे एक उत्कृष्ट बंगलोरी साड़ी पहने थीं,

जिसका सुंदर लाल रँग सोने के समान उसके कान्तिशाली शरीर पर बड़ा भला मालूम होता था।

पति ने देखते ही कहा, 'प्रिये! तुम कितनी सुंदर हो।' लज्जा से मिसेज़ कौशिक के कपोल आरक्त हो गए। उनका सौंदर्य और भी खिल उठा।

मोटर-सायकल पोर्च में खड़ी ही थी। मिस्टर कौशिक ने अंगरेजी प्रथानुसार पत्नी को सहारा देकर 'साइड कार' में बैठाया, और बोले "गुजराती ढंग से साड़ी सिर पर ले लो, जिससे बालों में धूल न गिरने पावे।"

स्वयं उन्होंने भी अपने सिर पर हॅट जमाकर रखली बाहर जाते समय वे हमेशा हॅट पहनते थे—और हुए रवाना।

फट् फट् फट् करते हुए दोनों पति-पत्नी पर्वतीपुर-मंगा-पटनम-रोड पर से चले। लोकल बोर्ड का रास्ता था। कौन ध्यान देता है? कई गढ़े और खाइयां थीं। खैर।

तहसील पिछड़ी हुई थी। लोगों के लिए मोटर-साय-कल एक असाधारण चीज थी। बैलगाड़ियों को हटाने के लिए आधे मील से बिगुल बजाना पड़ती। तब कहीं

कुछ इधर तो कुछ उधर होते और कुछ तो यही विचार करते रह जाते कि किस पटरी पर गाड़ी करनी चाहिए। ज्योंही असिस्टेन्ट कलेक्टर साहब अपनी पत्नी सहित वहां से गुजरे त्योंही लोगों के झुंड के झुंड राह पर आकर उनकी ओर यों आश्चर्य भरी नजर से देखने लगे मानों वे किसी विचित्र प्राणी को देख रहे हों।

जब मि. कौशिक कलेक्टर के बंगले पर पहुँचे तो वे बुरी तरह थके हुए थे। उनके चेहरे पर की वह प्रसन्नता और ताजगी भी अदृश्य हो गई थी। पर मिसेज़ मोबरली बड़ी अच्छी महिला थीं। उनकी बोलचाल और शैली अत्यन्त मनोहर थी। और हिन्दुस्तानी मिहमानों से तो वे बड़ी खुश होती थीं।

श्रीमती कौशिक से वे बड़े प्रेम से मिलीं। उनकी साड़ी उन्हें बहुत पसन्द आई। "कितनी सुन्दर! कैसी बढ़िया रेशम है। ये फूल! और तुम्हारे ये कालेकाले बाल! मेरे भी ऐसे अच्छे बाल होते तो कितना अच्छा होता! हमारे इन गाऊन्स की बनिस्बत आपकी ये साड़ियां कितनी मनोहर मालूम होती हैं?" इत्यादि इत्यादि।

सब प्रसन्न हो गए

× × ×

बड़ा आनंद रहा। कहानी का प्रोग्राम (कार्यक्रम) भी था। हर एक को एक मजेदार कहनी कहने के लिए कहा गया था। और कहानी मजेदार हो या न हो, सब को दिल खोलकर हंसना जरूर चाहिए। भोज में एक डिप्टी कलेक्टर भी आये थे। युवक थे, सब लोग इनसे खुश थे। कहा जाता था कि वे बड़े चतुर अधिकारी और भारी कहानी कहनेवाले थे।

'अब आपकी बारी है मिस्टर साकेतराम, बढ़िया कहानी सुनाइए।' मिसेज मोबरली ने कहा।

'मुझे एक कहानी याद तो है. पर वह इस समाज में कहने योग्य नहीं है। विनोदपूर्वक कटाक्ष करते हुए मि. साकेतराम बोले।

'नहीं वही कहनी होगी' मि. कौशिक बोले। हाल ही में अपने कौशल पर वे शाबाशी प्राप्त कर चुके थे।

"तब क्या आप मुझे यह वचन देते हैं, कि बाद में मुझे आप दोष नहीं देंगे ? पर नहीं, अब तो मुझे यही

मालूम होता है कि मुझे वह कहानी यहां नहीं कहनी चाहिए। वह ठीक नहीं रहेगी। मैं आपको दूसरी कहानी सुनाऊँगा।"

"नही नहीं, वही सुनाइए चीज़ तो वही सुनेंगे।" कह कर हर एक व्यक्ति चिल्लाने लगा।

"खैर, तो सुनिएगा। कहानी सच्ची है और खूबी यह कि आज की है।

"आज ही की? चलिए, सुनाइए झटपट।" सभी बोले।

"थोड़ी चाय लीजिएगा मिसेज कौशिक?" मि. सकेतराम ने पूछा।

"अपने इक्के में सवार हो मैं पर्वतीपुर रोड पर से आ रहा था। जानते हैं न आप, जहां भीमवरम् का रास्ता पापनाशम् के पास आकर उसमें मिल जाता है? वहां पर मैं जरा ठहर गया। जहां कहीं रैयतों का झुंड हो, एक डिप्टी कलेक्टर को ठहरना ही पड़ता है। उसे तो इनके संपर्क में हमेशा रहना चाहिए न? हां एक आई. सी. एस. को भले ही इसकी जरूरत न हो?"

मिस्टर मोबरली ने हंसकर कहा—'यह इशारा आप की ओर है मि. कौशिक।'

"नहीं, नहीं, मुझे अपनी कहानी कहने दीजिएगा।" मि. साकेतराम बोले। "मैं जरा ठहर गया। वहां कुछ लोग खड़े हुए थे। अब बताइए उन लोगों ने क्या कहा?"

"हां, हां, आगे बढ़िए जनाब"। कहकर सभी लोग चिल्लाने लगे। सब को यही ख्याल हुआ कि कहानी यों ही मामूली जान पड़ती है।

"मैंने पूछा 'क्यों भाई, बारिश-वारिश तो अच्छी रही'? सब के सब एकदम बोल उठे 'जी नहीं' और मेरी ओर आश्चर्य तथा कुतूहल भरी नजर से देखने लगे, जैसा कि अक्सर किसान देखते हैं। इतने ही में एक बूढ़ा आदमी मेरे नजदीक आकर धीमी आवाज से गंभीरता पूर्वक बोला—'हुजूर, बारिश कैसे हो? जब भले भले ब्राह्मण के घर की औरतें भी गोरों के साथ भागने लग जायँ?

"हैं, यह क्या बात है?" आश्चर्यान्वित होकर मैंने पूछा। मुझे सन्देह होने लगा कि इधर कहीं ऐसी कोई

लज्जाजनक घटना तो नहीं हो गई और अखबारों तक न पहुँच पाई हो।

"अजी स्वामी, मैंने अपनी आंखों देखा।" वह बूढा बोला।

मैंने जरा कड़ककर पूछा—'सच कहते हो?' मुझे शक हुआ कि यह बूढ़ा हम ब्राह्मणों का हंसी उड़ाकर कुछ मजाक करना चाहता है।

"हजूर, झूठ कैसे? अपनी आंखों देखी बात न कह रहा हूँ मैं? राम राम बड़ा बुरा काम! आंखों से देखा नहीं जाता था और देखकर आंखों पर विसवास करने को जी नहीं चाहता था। क्या बताऊं सरकार, मैंने यह अपनी आंखों यहां, और अभी—आध घंटा भी नहीं हुआ होगा तब–देखा। अभी यहां वह एक जादू वाली रबर की गाड़ी आई थी, जो पीछे से फट् फट् करती हुई धूँआ छोड़ती जाती है। वह बदमाश गोरा तो साहब का सा टोप लगाए पहिये पर बैठा था, और उसमें लगी हुई दूसरी गाड़ी में—उस सुन्दर हरी गाड़ी में—लाल रेशम की साड़ी पहने हुए एक भली सी ब्राह्मण की लड़की बैठी थी, जो किल-किलाती हुई जा रही थी, मानो उसे उस दुष्ट गोरे के द्वारा

भगाये ले जाने पर बड़ी खुशी हो रही हो। हमें देख लेने पर भी उन्हें लाज-सरम का कहीं नाम तक नहीं था साहब ! दिन दहाड़े पाप ! बापरे बाप, हमारी क्या दसा हो गई है। इतने पर जो भगवान् बर्खा नहीं भेजे तो कौन अचरज की बात है ?"

फिर असिस्टेन्ट कलेक्टर की ओर मुड़कर मिस्टर साकेतराम ने पूछा—'तो मिस्टर कौशिक आप की 'साइड कार' तो हरी नहीं है,

शरम के मारे मि. कौशिक " हां " कहकर ही रह गये। काटो तो खून नहीं।

मिसेज मोबरली की हंसी जब रोके नहीं रुकी तब वे बोलीं—'और क्या आप हॅट भी पहने हुए थे, मिस्टर कौशिक ?'

इधर अपनी झेंप छिपाने की कोशिश करते हुए मिसेज कौशिक ने दूध का 'जग' उलटा दिया।

"नहीं, मिस्टर साकेतराम आप बड़े दुष्ट हैं, निर्दय हैं। आप को ऐसी झूठ–मूठ की कहानियाँ नहीं बनानी चाहिए।" मिस्टर मोबरली बोले।

तिपाई पर की चीजों को ठीक करते हुए मि. साकेत-राम बोले—"यह तो खरी-खरी बात है, मेरे दिमाग की उपज नहीं। भला किसी को ख्याल भी हो सकता है कि हॅट्स को इस्तेमाल करने से ऐसे अनर्थ हो सकते हैं।"

कहा जाता है कि मि. कौशिक तब से पत्नी के साथ बाहर जाते हुए फिर कभी हॅट पहने नजर नहीं आये। पर हाँ उस दिन से उनके और साकेतराम के बीच का प्रेम जरूर ठण्डा हो गया।

अन्धी लड़की

अमीर आदमियों के घरों में जहाँ दास दासियाँ हर प्रकार के आराम पहुँचाने के लिए खड़े रहते हैं, इलाज इत्यादि की हर तरह की सुविधा होती है, बीमार पड़ना ऐश करने का एक ढँग है। जिस घर में दरिद्रदेव नंगे नाच रहे हों वहां बीमारी कुछ और ही चीज़ है। लोग डाक्टर को फीस देकर बुलाने का तो स्वप्न भी नहीं देख सकते। तहसील के अस्पताल तक जहाँ इलाज मुफ्त होता है—बीमार को ले जाना कठिन हो जाता है। बीमार को ले जाने के लिए कोई गाड़ी मिल भी जाय तो गाड़ी का किराया देने के लिए पैसा पास नहीं होता। बीमार बेचारा ज्वार और बेझड़ की रोटी चाहे हज़म कर सके अथवा नहीं परन्तु उसे वही खानी पड़ती है। चावल या दूध के लिए पैसा ही नहीं होता। फाके-मस्ती और शीतला माता इन दो की शरण में जाने के अतिरिक्त ग़रीबों की कोई चारा नहीं। मर गए तो मर गए बच गए तो बच गए।

× × ×

"इस अनुभव को मैं कभी नहीं भूलूँगा।" लक्ष्मीदास जी ने कहा। "इससे चरखे में सौ-गुनी अधिक मेरी श्रद्धा बढ़ गई।"

सेनगोडन एक किसान था। तमिलनाड़ के वेल्लाल पट्टी ग्राम में उसका छोटा सा खेत था। वह बड़ा होशियार दूरदर्शी और मिहनती था। उसका पिता उसे बीस वर्ष का छोड़कर मरा था। उसकी माँ सदा बीमार ही सी रहती थी। चौदह वर्ष की उम्र का उसका छोटा भाई ही बस एक काम में उसकी मदद करने वाला था।

"सेनगोडन, इस वर्ष तुझे विवाह जरूर कर लेना

चाहिए। ऐसा कितने दिन तक रहेगा? मैं बूढ़ी हो चली हूँ। तेरे बाप ने बहुत कर्ज़ा छोड़ा था, परन्तु भगवान् की दया से हम लोगों ने परिश्रम करके उसे निपटा दिया है। अब तेरे सिर पर कोई बोझा भी नहीं है। कालियक्का बड़ी सुन्दर छोकरी है। लम्बे क़द की है; शरीर भी हृष्ट पुष्ट है। ठीक तेरे जोड़ की है। तू अकेला ही कहाँतक दिनरात मेहनत करता रहेगा? मैं अपने मरने से पहले देखना चाहती हूँ कि तेरा विवाह हो जाय जिससे तेरा भी घर बस जाय। खेत पर तेरे लिए रोटी ले जाने वाला, घर के काम काज और ढोरों की देख भाल करने वाला घर में एक आदमी हो जायगा। फिर मैं आनन्द से मरूँगी।"

सेनगोडन चुप खड़ा था। उसकी माँ दो वर्ष से अपने भाई की लड़की से विवाह कर लेने के लिए सेनगोडन से कह रही थी। सेनगोडन की माँ की कमर में अब सख्त पीड़ा रहने लगी थी इसलिए वह भी सोच रहा था कि खेत पर काम करने वाला एक आदमी और घर में आ जाय तो अच्छा ही है।

"कालियक्का का बाप तुम्हारे बाप से लड़ता था। इस बात का विचार नहीं करना चाहिए। उस झगड़े के कारण हमारा नाता नहीं टूट सकता, लड़की अच्छी है। बस इस बात का ख्याल करना चाहिए। पुराने झगड़ों को भूल जाना चाहिए। लड़की के बेवकूफ़ बाप के कारण हम लड़की को नहीं त्याग सकते।"

"बहुत अच्छा, माँ!" सेनगोडन एकाएक बोल उठा। "मालूम पड़ता है मुझे किसी न किसी लड़की से विवाह करना ही पड़ेगा। फिर जैसी और वैसी यह। दूसरी लड़की कहाँ ढूँढते फिरेंगे? मिली भी तो न मालूम कैसी मिले!"

बुढ़िया खिल उठी। अपनी कमर का दर्द भूल गई। तुरन्त उठकर भाई के घर पहुँची और खुशखबरी कह सुनाई।

× × ×

विवाह हो गया। सेनगोडन के खेत में इस वर्ष खूब फसल हुई थी। सेनगोडन को अपने घर पर ब्याये हुए बधिया पर उतना ही अभिमान था जितना अपने खेत पर। शनिवार की पैंठ में इस बधिया के चालीस रुपये

आसानी से मिल गये। विवाह के सब खर्च इसी से निकल गये और सेनगोडन को विवाह के लिए कोई कर्ज़ा न लेना पड़ा। मोई * में सम्बन्धियों के पास से सौ रुपये और आ गये थे। ये सौ रुपये उसने सब के सब ख़र्च नहीं कर डाले।

"खाने पीने और तमाशे में यह रुपये क्यों खर्च कर डाले जायँ? हमें किसी दिन ये रुपये फिर वापिस देना ही पड़ेंगे।" सेनगोडन ने अपनी माँ से कहा। मोई में से पचास रुपये उसने बचा लिये, और अपने खेत का कुँआ गहरा करवा लिया जिससे कुए में कुछ फीट पानी और आगया।

कालियक्का सेनगोडन के पास रहने को आगई। उसके घर में क़दम रखते ही सेनगोडन का घर भरा-भरा दीखने लगा। सेनगोडन की माँ का दर्द बढ़ गया था परन्तु अब वह पहले की तरह बड़बड़ाती नहीं। बहू बड़ी अच्छी और मेहनती आई थी। काम-काज में खूब सहायता करती थी। बड़ी हँसमुख थी। घर का काम काज और जो योग्य खेत

* टीका

का सारा काम वह खूब मुस्तैदी से करती थी। सास मजे से बैठी-बैठी दिन भर चर्खा चलाती थी।

दो वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। आरकाटी गाँव में आने लगे। वेल्लालपट्टी में जिधर देखो उधर किसानों में मिर्च के टापू और लँका जाकर मजदूरी करने की चर्चा हो रही थी। इतने में ही सीतला का प्रकोप हुआ और मिर्च के टापू और लँका आदि जाने की चर्चा कुछ दिन के लिए बन्द हो गई। गाँव के बाहर आना जाना तक बन्द हो गया। गाँव की देवी के पुजारी ने प्रथा के अनुसार उछल कूदकर गाँववालों को देवी मैय्या का सख्त हुक्म सुना दिया था कि, गाँव में न तो कोई बाहर से आ सकता है और न कोई गाँव के बाहर जा सकता है। एक पक्ष में छः बच्चे मर चुके थे। और बहुत से बीमार पड़े थे।

टीका लगाने वाला डाक्टर अपने औजार, दवाइयाँ, रजिस्टर इत्यादि लेकर गाँव में आया। परन्तु बेचारे को निराश होकर लौट जाना पड़ा। क्योंकि गाँव में कोई मनुष्य अपने बच्चे को डाक्टर से छुलाने तक को तैयार नहीं था। गाँव वाले कहते थे कि मैय्या आजकल बड़े क्रोध में

हैं और जिस बच्चे के टीका लगेगा वही मर जायगा। डाक्टर ने गाँव के मुखिया को धमकी दी कि, तुम बिल्कुल मदद नहीं करते हो मैं तुम्हारी शिकायत कर दूँगा। डाक्टर को शान्त करने के लिए मुखिया उसे अछूतों के नगले में ले गया और वहाँ इतने बच्चों के टीके लगवा दिये कि डाक्टर की अच्छी तरह खाना पूरी हो गई और उसको अपनी रिपोर्ट भरने का खूब मसाला मिल गया। तीसरे पहर के समय दोनों ने अछूतों के घरों पर हमला बोला और किसी बहाने अथवा कहासुनी की परवाह न करके आन की आन में पचास लड़के लड़कियों को गोद डाला। एक ही सूई से पचासों के टीके लगा दिये गए। लोशन और स्प्रिट-लेम्प पर समय बरबाद नहीं किया गया। एक टीका लगा चुकने के बाद सुई को लोशन से धोकर लेम्प पर साफ़ कर लेने का नियम था जिससे एक बच्चे के शरीर के कीटाणु दूसरे के शरीर में प्रवेश न कर जाँय। परन्तु टीका लगाने वाले महाशय समझते थे कि इस क़ायदे की पाबन्दी नहीं हो सकती। कायदे के मुताबिक अगर सुई को बार-बार लेम्प की बत्ती पर साफ़ किया जाय तो

सुईयां जल्दी खराब हो जाती हैं। नई सुईयां मँगाते हैं तो दफ्तर वाले नाराज़ होते हैं, और जवाब तलब करते हैं। दूसरे उन लोगों ने सोचा कि गाँव के आदमी मज़बूत होते हैं। उनके शरीर में बाहरी कीटाणु प्रवेश करते ही अपने आप मर जाते होंगे। शहर वालों की और बात है। गाँव वाले एक दूसरे से इतना मिलते जुलते हैं कि अगर एक गाँववाले के शरीर के कीटाणु दूसरे के शरीर में चले भी जाँय तो अधिक नुकसान की—हमारे डाक्टर साहब की राय से—सम्भावना नहीं है। खैर।

डाक्टर के आने से सचमुच ही मैया का प्रकोप बढ़ा। दिन पर दिन अधिक मौतें होने लगीं। अछूतों के नगले में भी बीमारी फैल गई।

क्या आपने कभी किसी गरीब के घर में बीमारी देखी है? गरीब—उन लोगों की परिभाषा में गरीब नहीं जिन्होंने अपनी आवश्यकतायें जरब दे देकर बढ़ाली हैं और जिन्हें उन अनावश्यक आवश्यकताओं के छिन जाने या न मिलने से दुःख होता है। गरीब इस परिभाषा में कि जिन्हें न तो रोज पेट भर अन्न ही मिलता हो और न इज्जत

और प्राण की रक्षा के लिए जिन वस्तुओं की आवश्य-कता हो उन्हें ख़रीदने के लिए ही पैसा पास हो। गरीब के घर में बीमारी कोढ़ में खाज है जिसके स्मरण से रोंगटे खड़े हो जाते हैं गरीब के घर में बीमारी आई तो फिर बचने का बस एक ही मार्ग रह जाता है—मृत्यु। मृत्यु से बीमार को भी शान्ति मिल जाती है और घरवालों को भी। अमीर आदमियों के घरों में जहाँ दास दासियाँ हर प्रकार के आराम पहुँचाने के सामान लिये खड़े रहते हैं, इलाज इत्यादि की हर तरह की सुविधा होती है, बीमार पड़ना ऐश करने का एक ढँग है। जिस घर में दरिद्रदेव नङ्गे नाच रहे हों वहां बीमारी कुछ और ही चीज़ है। लोग डाक्टर को फीस देकर बुलाने का तो स्वप्न भी नहीं देख सकते। तहसील के अस्पताल तक जहाँ इलाज मुफ्त होता है—बीमार को लेजाना कठिन हो जाता है। बीमार को ले जाने के लिए कोई गाड़ी मिल भी जाय तो गाड़ी का किराया देने के लिए पैसा पास नहीं होता। बीमार बेचारा ज्वार और बेझड़ की रोटी चाहे हज़म कर-सके अथवा नहीं परन्तु उसे वही खानी पड़ती है। चावल

या दूध के लिए पैसा ही नहीं होता । फाके-मस्ती और शीतला माता इन दो की शरण में जाने के अतिरिक्त ग़रीबों का कोई चारा नहीं । मर गये तो मर गये, बच गये तो बच गये ।

बेचारे सेनगोडन पर बड़ी विपत्ति आ पड़ी । उसके छोटे भाई के शीतला निकल आई थी । उसकी स्त्री लड़के की सेवा सुश्रूशा करती थी इसलिए उसके भी शीतला निकल आई । बुढ़िया मां का गठिया का दर्द भी बढ़ गया । एक महीने की घर भर की सख्त परेशानी के बाद लड़का तो अच्छा हो गया परन्तु बेचारी कालियक्का की आँखें हमेशा के लिए जाती रहीं । जब उसे मालूम हुआ कि बीमारी चली गई और उसका शरीर ठीक हो गया तब वह आँखें मलने लगी कि ईश्वर का बनाया हुआ सुन्दर प्रकाश आँखें खोलकर फिर देखें । परन्तु चारों ओर अन्धकार और निबिड़ अन्धकार को छोड़कर कुछ भी नहीं था । जब उस अभागी को अपनी यथार्थ स्थिति का भान हुआ तब वह अपने दिन रोकर बिताने लगी । आँखों में से आंसुओं की धारें बाहर आती थीं

परन्तु आँखों के भीतर प्रकाश की एक किरण भी नहीं पहुँच पाती थी।

\+ + +

लक्ष्मीदास पुरुषोत्तम सेठ और मैं गांव में घूमने निकले। वे श्री० शंकरलाल बेंकर के साथ साबरमती से इधर का खादी कार्य देखने आये थे। हाथ में रूई धुनने का धनुष लिये हुए वे कातने वालियों के घर प्रसन्नचित्त देखते फिरते थे। वे कातने वालियों को बतलाते जाते थे कि रूई धुनने का अच्छा तरीक़ा क्या है, कैसे सूत बात की बात में काता जा सकता है, कैसे रूई का अच्छा से अच्छा इस्तेमाल किया जा सकता है। जिधर हम लोग जाते थे, उधर ही कातने वालियों की भीड़ हमारे चारों ओर लग जाती थी। उनके धनुष की ताँय-ताँय की ध्वनि सुनते ही स्त्रियाँ काम काज छोड़कर झोंपड़ों में से निकल आती थीं। और खड़ी होकर लक्ष्मीदास भाई का धुनना देखती थीं।

थोड़े से नगले देख चुकने के बाद हम लोग वेल्लाल पट्टी पहुँचे। एक कच्चे झोंपड़े के सामने प्याल पर बैठी हुई एक लड़की चरखे में मशग़ूल थी।

"आइए, ज़रा इसे देखें" लक्ष्मीदास भाई ने कहा। "हाँ" मैंने कहा। "यह एक छोकरी है। इसके काम का बड़ों के काम से मुक़ाबला करेंगे।"

हम लोग उसके निकट पहुँच गये। परन्तु मुझे देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह जैसी को तैसी बैठी रही। मानो उसे हमारे निकट पहुँचने की कोई खबर ही न हुई हो। सदा बहार की तरह हमेशा हँसमुख रहने वाले किसानों की स्त्रियाँ ऐसा शुष्क व्यवहार कभी नहीं करतीं। मैंने ग़ौर से छोकरी के मुँह की ओर देखा और तब मुझे पता चला कि उसकी आखों में कुछ खराबी है। पर फिर भी वह कात रही थी। मैंने पूछा—

"बहिन, तुम्हारी आँखों में क्या हो गया है?"

उसने कुछ उत्तर न दिया। चुपचाप सूत कातती रही। परन्तु कुछ दूर पर प्याल पर बैठे हुए एक बूढे ने जो सूत उतार रहा था कहा—

"मैय्या ने इसकी आँखें ले लीं।"

"कितने दिन हुए?" मैंने पूछा।

"दो वर्ष के करीब होने आये" दर्वाजे में खड़ी हुई

एक स्त्री ने कहा। "इसके चेचक निकली थी और उसी में यह अन्धी हो गई। हम लोग इसको खाना देते हैं। इसके पति ने इसे घर से निकाल दिया है। यह अन्धी रोज़ इसी प्रकार बैठकर चर्खा चलाती है और सप्ताह भर में आठ आने का सूत कात लेती है। हमारी गृहस्थी के मिर्च मसाले के लिए यह पैसे काफ़ी होते हैं। भगवान् ने इसके भाग्य में ऐसा ही लिखा है। हम लोग क्या कर सकते हैं?"

लक्ष्मीदास भाई को रोमाञ्च हो आया। उन्होंने पूछा, "और इसके लिए रूई कौन धुनता है?"

"मैं अपने और उसके लिए पींज लेती हूँ।" स्त्री ने उत्तर दिया। "बुढऊ सूत लपेट लेते हैं। हम लोग सब कुछ तैयार करके पूनियों की टोकरी और चर्खा उसके सामने रख देते हैं। बेचारी! और कर ही क्या सकती है?"

"क्या तुम इसकी माँ हो?" मैंने पूछा।

"हाँ, यह मेरे ही पेट से जन्मी है।" स्त्री ने साँस भरकर कहा।

मैंने सोचा कि इस अभागी लड़की को घर से निकाल

देने वाला इसका पति अवश्य ही बड़ा राक्षस होगा। मैंने पूछा—"क्या इसका पति इसी गाँव में रहता है ?"

"हाँ, वह यहीं है। वह इन्हीं बुढऊ की बहिन का लड़का है। परन्तु वह बेचारा क्या करे! वह कैसे मेरी छोकरी को अपने घर में रखकर उसे खिलाये पिलाये और पहिनने को कपड़े दे ? मेरी छोकरी अन्धी हो जाने के कारण उसके किसी काम की नहीं है। एक दो दिन की तो बात है ही नहीं। जिन्दगी भर का जँजाल है। भगवान् ने उसके घर में इतनी माया भी नहीं भर दी है कि वह बैठे ही बैठे खिलाया करे।"

"इन ग़रीब मनुष्यों की आत्मा भी बड़ी क्रूर हो जाती है।" मैंने लक्ष्मीदास जी से कहा। "यह लोग एक स्त्री अथवा एक बैल को भी मुफ्त बैठाकर नहीं खिला सकते। काम करो तो रोटी मिलेन हीं तो नहीं। इनसे शिकायत भी क्या की जाय ? बेचारे दरिद्रता में भी तो बुरी तरह डूबे हुए हैं।"

"सच है।" लक्ष्मीदास जी ने सोचते कहा। "परन्तु यह बड़ी अचरज की बात है! क्या इस गाँव में कोई और अन्धी स्त्रियाँ भी चर्खा चलाती हैं ?

हम सब लोग बातें करने लगे और अन्धे चरखा चलाने वालों के दृष्टान्त सोचने लगे।

"बहिन, क्या तुम्हें चरखा चलाने में आनन्द आता है?" लक्ष्मीदास जी ने अन्धी लड़की से पूछा।

"आनन्द? हाँ।" लड़की ने उत्तर दिया। "अगर चरखा न हो तो मुझे जीवन ही काटना मुश्किल हो जाय। सुबह से शाम तक अगर कातना न हो तो क्या करूँ? अगर मैं कुछ परिश्रम न करूँ तो कैसे अपने माँ बाप से रोटी की आशा रक्खूँ?"

"हम लोग बड़े ग़रीब हैं, मालिक। एक आना रोज़ की कमाई भी हमारे लिए बहुत है। बेचारी लड़की चरखे पर बैठकर अपने खाने लायक़ कमा लेती है। अगर यह चरखा न चलाए तो हमारे लिए उसको रोटियाँ देना बड़ा मुश्किल होजाय। इसके पति ने इसको निकाल दिया था। अब चरखा ही इसका पति और सँरक्षक है।"

"इस अनुभव को मैं कभी नहीं भूलूंगा।" लक्ष्मीदास जी ने कहा। "इससे चरखे में सौ-गुनी अधिक मेरी श्रद्धा बढ़ गई।"

अभागिनी !

"न, न," पार्वती ने कहा "बीरन की लढ़िया मत ख़रीदना। उसकी अभागी गाड़ी मोल लेने से कहीं हम पर भी बुरे दिन न आ जाँय ! और फिर रुपया उधार लेकर गाड़ी ख़रीदने से क्या फ़ायदा ? हम लोग जैसे हैं, वैसे ही क्या बुरे हैं ?

× × ×

बहुत दिनों तक पार्वती के मन में बड़ी उथल-पुथल होती रही। अन्त में वह गिरी। क्रूर कामी मनुष्य उस समय अवश्य ही सफलता प्राप्त करलेता है जब कि उसके शिकार की ग़रीबी और निःसहायता भी उसका साथ देने को तैयार हो जाती है।

× × ×

"जग की मैय्या, मुझे माफ करो। अपनी गोद में ले लो" यह कहकर वह—चिल्लाई और आकाश में कूद पड़ी।

एक क्षण का सुख और शान्ति ! फिर पृथ्वी और अकाश घूम उठे। ओह ! कैसा शान्तमय और सुन्दर ; फिर एक भयंकर धड़ाका हुआ जैसा कि उसने अपने जीवन भर में कभी नहीं सुना था। कोई चीज उसके दिमाग में फट पड़ी और फिर अनन्त शान्ति... !

पार्वती की दुखी आत्मा पिंजड़े में से उड़ गई।
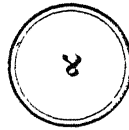
करुप्पन् और उसकी स्त्री पार्वती को अलग रख दिया गया था। दक्षिण भारत के किसानों में यह प्रथा है कि जब किसी मनुष्य की शादी हो जाती है, तो उसको उसकी स्त्री के साथ एक अलग घर में रख देते हैं कि वे अपनी गृहस्थी अलग बनावें और उसकी देख भाल करें। उनको मेहनत मजदूरी करके किसी न किसी तरह अपनी गुज़र चलानी पड़ती है। यह अच्छा रिवाज

है। आलसी ऊँची जातियों में सम्मलित कुटुम्ब की प्रथा होने के कारण नित नये झगड़े खड़े रहते हैं। करुप्पन के माता-पिता वृद्ध थे और वे गाँव वाले खानदानी मकान में रहते थे। उसका बड़ा भाई खेत पर झोंपड़ी में रहता था। करुप्पन् अपनी गृहस्थी बना कर अलग रहने वाला था इसलिए खेत तीन बराबर-बराबर हिस्सों में बाँट लिया गया था। बड़ा लड़का अपना और अपने बाप के हिस्से को जोतता था। तीसरा हिस्सा करुप्पन् को दे दिया गया था। सबने मिलकर उसके लिए एक मिट्टी का झोंपड़ा खेत पर ही बना दिया था। मवेशियों का भी बटवारा हो गया था। करुप्पन् को एक जोड़ी बैल और कुछ बकरियाँ मिली थीं। करुप्पन् तीस वर्ष का खिलता हुआ जवान और पार्वती गाँवभर में सबसे सुन्दर लड़की थी। पार्वती का मुख और शरीर रानियों का-सा था। वह हमेशा चींटी की तरह काम में लगी रहती थी। और ऐसा प्रतीत होता था मानो वह इस घर में वर्षों से रह रही है। किसी अनजान या नई जगह नहीं आ गई थी। वह काम करते-करते जिस समय करुप्पन् की

तरफ देखकर मुस्करा देती थी तो करुप्पन् को ऐसा लगता था मानों वह किसी चक्रवर्ती साम्राज्य का स्वामी बना दिया गया हो ।

पार्वती अपने बाप के घर से थोड़ा सा रुपया लाई थी। इस रुपये से उन्होंने एक दुधार भैंस ख़रीद ली । पानी समय पर बरसा । करुप्पन् ने खेत पर ख़ूब मेहनत की और छोटे से खेत को देखते हुए फ़सल बड़ी अच्छी हुई । पार्वती दिन भर काम करती और हर समय मुस्कराती ही रहती थी । उसके लिए दुनिया में करुप्पन्, बैल, खेत और भैंस बस यही चार चीज़ें थीं । इन सब से उसे जब कुछ समय मिलता था तो चरखे पर बैठकर थोड़ा बहुत सूत भी कात लेती थी । चरखा वह अपनी माँ के घर से ही साथ लेती आई थी । जब चाँदनी रातें होतीं थीं तो उसकी जेठानी भी अपना चरखा लाकर उसके पास बैठ जाती थी और दोनों बैठकर मज़े से कातती और गप-शप लड़ाती थीं ।

भैंस दूध अच्छा देती थी । पार्वती दूध को जमा देती और सुबह उठते ही फेर डालती थी । घर-आँगन झाड़ बुहारकर वह गाँव में मट्ठा बेंचने चली जाती और

सप्ताह में एक कोलियों की गली में दो रुपये का घी बेच आती।

दूसरे वर्ष करुप्पन् ने अपनी गृहस्थी फैलाने का विचार किया। "यह खेत बहुत छोटा है। हम दोनों के लिए इस पर हमेशा काफ़ी काम नहीं होता। अगर हम लोग एक गाड़ी ख़रीद लें तो उससे भी कुछ आमदनी हो सकती है। बैलों को भी बराबर काम मिलता रहेगा। दादारामन् को देखो न! वह अपनी लढ़ी से दो तीन रुपया सप्ताह फटकार लेता है। कभी-कभी तो चार-चार रुपया सप्ताह तक पैदा कर लेते हैं। तुम्हारे मट्ठा और घी बेचकर जमा किये हुए रुपये में कुछ रुपया और मिलाकर हम लोग एक गाड़ी भी और क्यों न ख़रीद लें? सुना है, वीरन गाँव छोड़कर जा रहा है। अपना कर्ज़ा पटाने के लिए खेत बेच ही रहा है शायद गाड़ी भी सस्ते में दे दे।"

"न, न," पार्वती ने कहा "वीरन की लढ़िया मत ख़रीदना। उसकी अभागी गाड़ी मोल लेने से कहीं हम पर भी बुरे दिन न आ जाँय! और फिर रुपया उधार

लेकर गाड़ी खरीदने से क्या फ़ायदा ? हम लोग जैसे हैं, वैसे ही क्या बुरे हैं ?

" बेवकूफ़ ! वीरन ने तो शराब पी-पीकर अपना घर तबाह किया है। गाड़ी में कौनसी बुराई है ? अच्छी सी सुन्दर लढ़िया है ! बीस रुपया उधार लेकर निपटाना मुश्किल नहीं हो जायगा।"

" मैं तो अपने रुपयों का सोना खरीदकर अपने लिए एक सुन्दर कराठा बनवाऊँगी।"

" कैसी मूर्खता की बातें करती हो।" करुप्पन ने कहा। " गाँव में सबसे सुन्दर तुम हो। गहना पहनकर अपनी शकल और बिगाड़ लोगी।"

करुप्पन् की बात ठीक ही थी। गँवारू गहना पहनकर पार्वती की शक्ल अधिक अच्छी नहीं हो सकती थी।

"मर्दों को क्या गरज़ कि स्त्रियों को क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए ! आखिर स्त्रियों को भले बुरे का ज्ञान ही क्या होता है ! मामा से सलाह करके जो तुम लोगों की समझ में आवे करो " पार्वती ने कहा।

मामा अर्थात् श्वसुर ने करुप्पन् की बात का विरोध

नहीं किया क्योंकि उसने देखा कि करुप्पन् की गाड़ी ख़रीदने की बड़ी इच्छा है। सप्ताह ख़त्म होने से पहिले ही करुप्पन् ने बोहरे से चालीस रुपया उधार लेकर और उसमें पार्वती के रुपये मिलाकर गाड़ी ख़रीद ली।

× × ×

करुप्पन् प्रायः गाड़ी किराये पर लेजाया करता था। कभी-कभी लम्बी मज़दूरी मिल जाती थी तो एक रात, एक दिन और कभी-कभी अधिक समय तक भी बाहर रहता था। दादारामन् भी उसके साथ गाड़ी में जाया करता था। वर्ष समाप्त होने से पहले ही रामन ने करुप्पन् को ताड़ी की दुकान पर लेजाकर दीक्षा देदी। फिर तो करुप्पन् जब गाड़ी लेकर बाहर जाता तो ताड़ी की दुकान पर अवश्य जाता। कभी-कभी तो ताड़ी पीने के लिए ही गाड़ी लेकर जाता। गाड़ी की आमदनी दिन पर दिन कम होने लगी और बैलों को अच्छी तरह दाना चारा भी मिलना बन्द हो गया। पहली बार जब करुप्पन् ताड़ी के नशे में घर आया तो पार्वती उसे देखकर चौंक पड़ी।

"तुमने मुझे बर्बाद कर दिया।" वह चिल्ला पड़ी।

भागिनी !

"चुप रहो !" करुप्पन् ने कहा, "किसने तेरा रुपया चुराया ?"

"तुमने ताड़ी पी है ?" पार्वती ने क्रोध से कहा।

"हाँ मैंने पी है। परन्तु तेरे बाप के पैसों से थोड़े ही पी है ? मुझे कौन रोक सकता है ?" करुप्पन् ने गरज कर कहा।

"मेरे घर में मत घुसो। जाओ, अपने बाप के घर जाओ। मैंने रोटी-वोटी कुछ नहीं बनाई है।" पार्वती ने कहा। घृणा से पार्वती का सुन्दर मुख कुरूप हो गया था।

"कलमुँही मुझे तेरी पकाई रोटी की दरकार नहीं है।" करुप्पन ने उसके एक धोल जमाकर कहा।

रोज यही होने लगा। कभी-कभी तो करुप्पन् पार्वती को बुरी तरह पीटता। वह बेचारी रो पीटकर गोद में बच्चे को उठाकर—अब उसके एक बच्चा था—अपनी जेठानी के घर चली जाती थी और वहाँ घर भर की पँचायत जुड़ कर मामले पर विचार करती थी। मामला दिन पर दिन बिगड़ता ही गया। बैल बूढ़े होकर मरने लगे। करुप्पन् ने उन्हें घाटे पर ही बेच दिये और नई जोड़ी ख़रीदने का

विचार करने लगा परन्तु उसके पास काफ़ी रुपया नहीं था। उसने पार्वती से वादा किया कि मैं अब फिर ताड़ी की दूकान पर कभी न जाऊँगा। पार्वती ने अपनी दूध और कताई से जो कुछ थोड़ा बहुत कमाकर रक्खा था उसे और अपनी विधवा बहिन से कुछ रुपया और क़र्ज़ लेकर करुप्पन् ने बैलों की एक नई जोड़ ख़रीद ली।

× × ×

तीन मास बीते। एक दिन बोहरे का आदमी पुराने क़र्ज़ का तकाज़ा करने आया। करुप्पन् ने कहा कि कुछ दिन और ठहरो।

एक दफ़ा माना, दो दफ़ा माना, तीन दफ़ा माना, चौथी बार बोहरे का आदमी एक बैल पकड़कर ले गया। करुप्पन् दौड़ा गया और बोहरे की ख़ुशामद की कि एक महीना और मान जाओ।

"मैं अब एक दिन भी नहीं ठहर सकता। नशाबाज़! किसने तुमसे कहा था कि पिछला क़र्ज़ा बिना चुकाये बैलों की नई जोड़ ख़रीद लेना? बोहरा बोला।

"तुम हमारे पिता समान हो, सेठ जी।" करुप्पन् ने

गिड़गिड़ाकर कहा । " एक महीना और ठहर जाओ । मैं तुम्हारी कौड़ी-कौड़ी दे दूंगा ।"

" मैं एक दिन भी नहीं ठहर सकता । बुधवार की पैंठ में तुम्हारा बैल बेंच दिया जायगा ।" बोहरे जमींदार ने कहा ।

"मेरा सर्वनाश हो जायगा, सरकार । मैं दिवालिया तो हूँ ही नहीं । अगर कुछ दिन आप और ठहर जाँयगे तो आपका रुपया नहीं मारा जायगा ।" करुप्पन् गिड़गिड़ाने लगा ।

" नहीं, ऐसा नहीं हो सकता ।" बोहरे ने कहा ।

" मैं ब्याज दूँगा ।" करुप्पन् ने कहा ।

"भागजा बदमाश कहीं का ।" जमींदार बोला । ब्याज देगा, बड़ा ब्याज देनेवाला चला है । जा, तुलाखाँ से किश्त लेकर रुपया अदा कर दे नहीं तो कल ही पैंठ में तेरा बैल मिट्टी के मोल बेंच दिया जायगा ।"

" करुप्पा और कोई रस्ता नहीं है ।" कारिन्दा सिट्टा बोला । "जाओ, कादिर मियाँ के पास जाओ । वह तुम्हारी मदद कर देंगे ।"

× × ×

करुप्पन् ने जाकर अपने बूढ़े बाप की ख़ुशामद की कि बड़े भैया से मुझे किसी तरह इस वक्त रुपया दिलवादो। बड़ा भाई रुपया देने पर राज़ी भी हो गया परन्तु उसकी स्त्री ने नहीं देने दिया।

"अगर तुमने उसे रुपया दे दिया" वह बोली "तो फिर हाथ धोकर ही बैठना। वापिस नहीं मिलेगा। उसे कादिर मियाँ के घर से ही रुपया लाने दो। हम लोग ज्यों-त्यों करके अपनी गृहस्थी चलाते हैं। कौन जानता है कि अब की बार वर्षा होवेगी ही? अगर अब की साल हम लोग फिर मुसीबत में पड़ गये तो कौन हमारी सहायता करेगा?" अन्त में बेचारे करुप्पन को लाचार होकर कादिर मियाँ की शरण लेनी पड़ी। कादिर मियाँ अपने घर बैठे-बैठे ही गाँव के हर एक आदमी, यहाँ तक कि जमींदार के भी चूल्हे चक्की की ठीक-ठीक ख़बर रखते थे।

"तुम नहीं जानते।" नम्बरदार भी बड़ी मुशकिल में हैं। उन्होंने भी मुझसे रुपया माँगा है।"

"बड़े आदमी का किसी न किसी तरह काम चल ही जाता है। अगर मेरा बैल बिक गया तो मुझे तो रोटियों के

भी लाले पड़ जायंगे । मह्रबानी करके मेरी मदद करो ।" करुप्पन् बोला ।

" अरे भाई ! मैं तुझे रुपया कहाँ से देदूँ ?" कादिर-मियं बोले । "मेरे पास जो कुछ रुपया है वह मैं नम्बरदार को देने का वायदा कर चुका हूँ ।"

" मैं बड़ी मुसीबत में हूँ ! ग़रीब की मदद करना ही चाहिए । नम्बरदार का बहाना न बताइए ।"

" यह बात तो ठीक है कि ग़रीब की मदद करना चाहिए । मैं नम्बरदार को जबान हार चुका हूँ ।"

ख़ैर । बहुत वाद विवाद के बाद क़ादिरमियाँ रुपया देने पर राज़ी हुए । करुप्पन् को ४५) रुपये मिले परन्तु उसे साठ रुपये का काग़ज़ लिखना पड़ा जिसको उसने पाँच रुपये महीने की किश्त के हिसाब से बारह महीने में दे देने का वायदा किया । कादिर मियाँ ने सूद नहीं लिया परन्तु करुप्पन् से यह ठहरा लिया कि जिस महीने में किश्त नहीं आवेगी उसमें एक रुपया जुरमाने का देना पड़ेगा ।

"करुप्पा, मैंने तेरा विश्वास कर लिया है ।" कादिर मियाँ बोले । "मेहनत कर करके रुपया कमाना और मुझे बराबर

देते जाना। नशा मत करना। तुम अच्छे घर के हो। तेरे स्त्री है, बच्चा है और खुदा की मिहरबानी हुई तो और भी बाल बच्चे होंगे। अगर नशा किया तो बर्बाद हो जावेगा।

"ठीक कहते हो, मालिक। मैं उस कम्बख्त चीज़ को फिर कभी हाथ भी न लगाऊँगा। मैंने एक बार सबक सीख लिया। आपने मेरी मुसीबत के समय सहायता की है। मैं आपकी मेहरबानी कभी नहीं भूलूंगा।"

जमींदार का कर्ज़ दे दिया गया और बैल छुड़ा लिया गया। जो रुपया कर्ज़ देकर बचा वह करुप्पन् ने पार्वती के हाथ में रक्खा।

"सुनो" वह पार्वती से बोला, "मैंने क़सम खाली है कि फिर कभी ताड़ी या नशा न पिऊँगा। मुझे रुपये की कुछ जरूरत नहीं है। तुम जो चाहो इसका करो। जो कुछ मैं कमाऊँगा लाकर तुम्हें दे दिया करूँगा।"

पार्वती बड़ी प्रसन्न हुई। वह समझी कि अब दिन अवश्य फिरेंगे। नवीन स्फूर्ति और उत्साह से जाकर वह अपने काम में लग गई।

× × ×

खेत में अधिक काम करने को नहीं था। परन्तु पार्वती ने सोचा—"मुझे कुछ न कुछ धन्धा करके अपने पति की सहायता अवश्य ही करनी चाहिए जिससे उनका कर्जा जल्दी उतर जाय।" कादिरखाँ अपने मकान में नई बारहदरी बनवा रहे थे और मैमार के नीचे काम करने के लिए मजदूरों की जरूरत रहती थी। तीन चार औरतें ईंटें गारा ढोने का काम कर रही थीं। वह भी उन्हींमें जा मिली।

पार्वती अँधेरे में उठती; घर झाड़ बुहार और चौका बर्तन करके भैंस दुहती; फिर मठा फेरती; मठा फेर चुकने पर मठा बेच घर लौट आती; फिर वह रोटी बनाकर खाती; अपने बच्चे को दूध पिलाती; और अन्त में बच्चे को जेठानी के पास छोड़कर कादिरखाँ के घर पर काम करने चली जाती; दोपहर की छुट्टी में घर आती परन्तु वक्त इतना कम होता था कि बच्चे को दूध पिलाकर और ठण्डी रक्खी हुई काँजी पीकर तुरन्त ही दौड़ जाना पड़ता था। सन्ध्या के समय उसे छुट्टी मिलती। तब आकर वह घर का काम काज देखती थी। वह सब काम बड़ी प्रसन्नता से

करती। काम तो बहुत करना पड़ता था। परन्तु मज़दूरी से जो चार आने रोज़ मिल जाते थे, वह उन बेचारों के लिए बड़ा भारी धन था।

पार्वती अपने पति में परिवर्तन देखकर फूली नहीं समाती करुप्पम् अपने वचन पर कई महीने तक कायम रहा। परन्तु बाद में फिर नशा करने लगा। आम-दनी फिर बर्बाद होने लगी। गाड़ी से जो कुछ आमदनी होती अब वह फिर पार्वती के हाथ में न आती या आती भी तो बहुत कम आती। करुप्पन् गाड़ी लेकर जाता, तीन-तीन चार-चार दिन बाहर रहता, लौटकर आता तो थोड़ी सी करब बैलों के लिए ले आता और बाकी आमदनी के बारे में इधर उधर के झूठे बहाने बना देता। कुछ दिनों बाद उसने बहाने न बनाकर पार्वती से साफ़-साफ़ कहना शुरु कर दिया। पार्वती ने भी पूछना छोड़ दिया। परन्तु वह घर पर और क़ादिरखाँ के यहाँ अपना काम पहिले की तरह मेहनत से करती रही।

एक दिन क़ादिरखाँ आकर अपने रुपये के लिए ऊधम मचाने लगा। यहाँ तक कि आपस में कहा सुनी तक हो

गई। मिस्त्री के नीचे काम करती-करती पार्वती झिड़कियों की आदी तो हो गई थी परन्तु जिन्दगी में जो शब्द कानों नहीं सुने थे आज वे शब्द उसे कादिरखाँ से सुनने पड़े। वह घर गई और अन्दर से रुपया लाकर क़ादिरख़ाँ के सामने फैंक दिया। उसका पति घर में जो पाता था निकाल ले जाता था फिर भी पार्वती ने इतना रुपया उसकी आँखों से बचाकर रख लिया था ! दिन भर पार्वती रोती रही। दुख के मारे दूसरे दिन काम पर भी न जा सकी। फिर भी वह हमेशा की तरह काम करती रही। परन्तु सूद ख़ोर क़ादिरख़ाँ के मुँह से जो शब्द उसने सुने थे उन्हें वह बहुत प्रयत्न करने पर भी न भुला सकी। अब उसके मुख पर न तो वह हँसी थी और न उसके हृदय में पहले का वह उत्साह। मैंमारों के नीचे काम तो करती रही परन्तु अब वह मनुष्यों की आवाज सुनकर थरथरा उठती थी। आश्चर्य की बात देखिए कि कामी आँखों को उसे देखकर अब उसकी कमज़ोरी में—बनिस्बत उन दिनों के जब उसके हृदय में साहस था और मन में शान्ति—अधिक प्रलोभन होने लगा। क़ादिरख़ाँ का लड़का काम की देख-भाल करता

था। उसकी दृष्टि और उसके शब्द कभी-कभी पार्वती को बड़ा कष्ट देते थे।

जब से पार्वती ने मजदूरी करना शुरू की थी उसके बच्चे का पाल-पोषण ठीक-ठीक होना बन्द हो गया था। बच्चा बीमार रहने लगा। एक दिन बच्चे को खूब जोर का बुखार चढ़ आया और खांसी होगई। एक सप्ताह के दर्द और कष्ट के बाद उस छोटे से जीवन का अध्याय समाप्त होगया।

करुप्पन् स्त्रियों की तरह रोने लगा। उसका बूढ़ा बाप बोला, "रोते क्यों हो? जिसने दिया था उसीने ले लिया।"

"मामा", पार्वती छाती कूटकर बोली, "भगवान् ने ऐसा दुःख मुझे क्यों दिखाया? मैंने तो दुनिया में कभी किसी का कुछ भी नहीं बिगड़ा।"

"बिटिया, रोने से क्या फ़ायदा? अभी तेरी उम्र ही कितनी है? भगवान् चाहेगा तो बहुत से बच्चे हो जाँयगे। सभी बीजों के कल्ले फूटकर बालियाँ नहीं बन जातीं? क्या उसके लिए कोई रोता है?"

"मुझे अब बाल बच्चे नहीं चाहिए, काका। भगवान ने मुझे बहुत सुख दुःख दिखा दिये। मुझे भी दुनिया से

उठा ले।" बूढ़ा हँसकर बोला, "अपने पति से कह कि नशा करके अपनी मिट्टी ख्वार न करे। इस दुख को भूल जा। बाल-बच्चे पैदा कर जिससे घर हरा-भरा हो और आनन्द से रहे। मैय्या तेरी सहाय करेगी।"

"मामा" मैं उस जहर को अब फिर कभी न छुऊँगा। अगर मैं ताड़ी पिऊँ तो गाय का खून पिऊँ।" करुप्पन् ने कसम खाकर कहा।

× × × ×

पार्वती की मुसीबतों का अन्त यहीं नहीं हो गया। अगले बुधवार के दिन जब करुप्पन् रामपुरा की ताड़ी की दुकान के सामने होकर निकला तो अपनी कसम एकदम भूल गया। वह अपनी गाड़ी में रुई की गाँठें भरकर तिरुपुर गया था और वहाँ से और गाड़ी वालों के साथ इस समय लौट रहा था। वह ताड़ी की दुकान के सामने रुका और अपने साथियों से चिल्लाकर कहने लगा—"अरे सुनो, कोई ताड़ी पियेगा? मैं तो छुऊँगा भी नहीं। मुझे अब उसकी जरा भी चाह नहीं है।"

"अगर तुझे चाह नहीं है तो अपने पैसे गाँठ में

दबाकर रख और घर की राह ले, व्यर्थ में गला क्यों फाड़ रहा है ?" एक गाड़ी वाला बोला और गाड़ी से कूद-कर ताड़ी की दुकान में घुस गया।

करुप्पन् कुछ देर तक खड़ा रहा। फिर वह भी दुकान में घुस गया। 'बस यह आखिरी बार है।" दुकान में घुसते समय वह सोचने लगा।

दूसरी पैंठ के दिन भी यही किस्सा रहा। "नशा कर लेने से अपनी सब चिन्तायें मिट जाती हैं ?" वह अपने साथियों से कहने लगा।

"बकने दो ? अपने पसीने की कमाई का रुपया खर्च करते हैं ? कौन , साला हमारा हाथ पकड़ सकता है ?" दूसरा बोला।

"सच है।" तीसरा कहने लगा। "दुनिया सराय है, यारो ! कौन इसमें हजार वर्ष तक जिया है ? यह चाँदी के टुकड़े न हमारे हैं न तुम्हारे ?"

"हाँ,यार ! न हमारे और न तुम्हारे।" चौथा बोला। "सब ताड़ी की दुकान वाले के हैं।" और ठठा लगाकर हँस पड़े।

"उल्लुओ !" दूसरा चिल्लाकर बोला। तुम सब के

सब तो बड़े शास्त्रियों की तरह बैठे-बैठे चर्चा चला रहे हो। पर देखो तो, यह ताड़ी अन्दर जाते वक्त कैसी जलन पैदा करती है ? इन रुई के व्यापारियों को भगवान् मारे।" करुप्पन् बोला। "यह चोट्टे आजकल धोखा देकर हमारी मज़दूरी बहुत काट रहे हैं।"

इसी प्रकार अन्धेरा हो जाने तक बातचीत चलती रही। बातचीत खतम होने पर सब उठे और अपनी-अपनी गाड़ियाँ हांककर चलते बने।

क़ादिरखाँ को किश्त देने का वक्त फिर आ गया था। पार्वती करुप्पन् से कई बार कह चुकी थी कि उसके घर पर जाकर पहले ही से रुपया दे आओ जिससे वह यहां न आवे।

"भाड़ में जाय कादिरखां। आने दो उसको। अबकी बार फिर उसने जबान निकाली तो सिरही फोड़ डालूँगा।" करुप्पन् बोला।

कादिरखां बहुत दिन तक नहीं आया। शायद वह और आवश्यक कामों में लगा था। करुप्पन् को भी उसकी याद न रही।

एक दिन प्रातःकाल कादिरखाँ का लड़का इस्माइल आया। परन्तु किश्त माँगने के बजाय उसने करुप्पन् से पूछा—"क्या रामपुरा कुछ मिर्चों के बोरे ले जाओगे ?"

"मुझे कुमार कुन्दन का भूसा ले जाना है। मैंने उससे एक सप्ताह से वायदा कर लिया है ?"

"उसकी क्या फ़िक्र है, करुप्पा ? कुमार कुन्दन का भूसा कुछ दिन और पड़ा रहेगा तो कुछ बिगड़ नहीं जायगा। हमारे मिर्चों के बोरे तुम ले जाओ। अगर वह कल तक नहीं पहुंचेंगे तो हमारा बड़ा अच्छा सौदा मारा जायगा।"

करुप्पन् राजी हो गया। खास तौर पर इसलिए कि इस्माइल किस्त के लिए तगादा करना भूल गया था।

करुप्पन् गाड़ी लेकर चला गया। संध्या समय अकेली पार्वती चूल्हे पर बैठी रोटी पका रही थी। इस्माइल फिर आया।

"क्या करुप्पन् लौट आया ?" उसने मकान के बाहर से पूछा।

"नहीं, अभी नहीं।" पार्वती ने जवाब दिया।

"हां जी, वह इतनी जल्दी कैसे लौट सकता है ? रास्ते में ताड़ी की दुकान भी तो पड़ती है ?" इस्माइल ने मकान के अन्दर घुसते हुए कहा ।

"हां, उस दुकान ने हम अभागी स्त्रियों को नष्ट करने के लिए ही जन्म लिया है ।" पार्वती बोली ।

इस्माइल बिना कहे ही बैठ गया । पार्वती अपना काम करती रही । उसने सोचा कि मेरे पति के इन्तज़ार में बैठेगा । इस्माइल ने बातचीत छेड़ी—

"सच कहना, क्या तुम अपने आदमी से परेशान नहीं हो ?" उसने पार्वती से पूछा ।

"पति भला बुरा जैसा भी हो उससे जब एक बार औरत बँध गई सो बँध गई ।" पार्वती ने बिना मुँह फेरे काम करते-करते कहा ।

"हां जी , ठीक है । अपना आदमी कैसा ही हो छोड़ा थोड़े ही जा सकता है ?" इस्माइल ने कहा ।

"कैसे दुर्भाग्य की बात है कि तुम जैसी सुन्दर और अच्छी स्त्री के गले में यह शराबी आदमी डाल दिया गया है ?" उसने फिर कहा ।

पार्वती चुप रही ।

इस्माइल पार्वती से उसकी कठिनाइयों के बारे में पूछने लगा और फिर बातें एक विषय से दूसरे विषय पर चलती चली गई । कुछ देर बाद इस्माइल उठा और करुप्पन् के इन्तज़ार की परवाह न करके चल दिया ।

दूसरे दिन भी इस्माइल आया और करुप्पन् को किसी काम पर भेजकर इसी तरह तीसरे पहर फिर पार्वती के पास आया । वह अपने साथ खजूर की खाँड के कुछ लड्डू भी लेता आया और पार्वती को जबरदस्ती देकर कहने लगा कि मेरे घर एक आसामी के यहां से यह मुफ़्त में ही आ गये थे ।

" जब मैं तुम्हें देखता हूँ तो मेरा हृदय एक प्रकार के आनन्द से भर जाता है " उसने कहा ।

" इसका अन्त कहाँ होगा ?" पार्वती मन में सोचने लगी ।

" जब मैं तुम्हारे पास आता हूँ तो तुम घबरा सी क्यों जाती हो ? क्या तुम सोचती हो कि मैं तुमसे क़िश्त के लिए तक़ाज़ा करूँगा ? मुझे रुपये की ज़रा भी फ़िक्र नहीं

हैं। केवल तुम मुझ से अच्छी तरह बोल दिया करो।" इस्माइल बोला। आगे की कथा कहने की आवश्यकता नहीं है बहुत दिनों तक पार्वती के मन में बड़ी उथल-पुथल होती रही। अन्त में वह गिरी। क्रूर कामी मनुष्य उस समय अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लेता है, जब कि उसके शिकार की गरीबी और निःसहायता भी उसका साथ देने को तैयार हो जाती है।

+ + +

किरम्बुर की ताड़ी की दूकान पर खूब भीड़ हो रही थी। दूकान के बाहर अछूतों का झुण्ड दीवार के सूराख के पास—जहाँ से उन्हें ताड़ी मिलती थी—शोर-गुल कर रहा था। अन्दर धूल, मक्खियाँ, सड़ी हुई ताड़ी की बदबू और गन्दगी के मारे नर्क का आनन्द आ रहा था। झगड़ालू मनुष्यों की कई टोलियाँ बैठी हुई जमीन-आसमान के कुलाबे एक कर रही थीं।

"अगर फिर कभी तूने ऐसी बात मुँह से निकाली तो मैं तेरे सारे दाँत झाड़ दूँगा।" करुप्पन् ने कहा।

"दाँत झाड़ देगा! शाबाश, जरा इस रुस्तम को

देखना, जो अपनी औरत तक को तो ठीक कर नहीं सकता और दूसरों के दाँत झाड़ने चला है !"

तड़ाक से करूप्पन् का कुल्हड़ उसके मुँह पर जाकर लगा और उसकी नाक से खून की धार बह निकली।

"बेवकूफ ! धोखेबाज ! औरत के लिए ऐसी सुन्दर ताड़ी फेंक रहे हैं। औरत का क्या विश्वास ?" दूसरा चिल्लाकर बोला।

"अरे ! देखो रमन मर गया," चौथा बोला और उसने उठकर करूप्पन् से लड़ने वाले मनुष्य की नाक और मुँह पोंछा। चोट अधिक नहीं लगी थी। रमन उठा और उसने एक बड़ी सी ईंट उठा कर करूप्पन् को मारी। करूप्पन् ने फुर्ती से सिर झुका लिया। बाल-बाल बच गया।

दूकानवाला अपनी जगह से चिल्लाया 'खबरदार, दूकान के अन्दर लड़ाई-झगड़ा न हो !'

करूप्पन् उठकर जल्दी-जल्दी दूकान में से बाहर आया। उसका दुश्मन भी उसके पीछे-पीछे चला, परन्तु दुकान के दरवाजे पर लड़खड़ाकर गिर पड़ा। करूप्पन् गाड़ी हाँक-कर जोर-जोर से गालियाँ बकता हुआ चल दिया।

करूप्पन् रोज से जल्दी घर पहुँच गया। उसे घर का दरवाजा अन्दर से बन्द मिला।

"अरे, ओ, दरवाजा खोल!" करूप्पन् चिल्लाया, 'दरवाजा अन्दर से बन्द करके क्या कर रही है? मैं यहाँ खड़ा हूँ। जल्दी खोल और बैलों को पानी पिलाने लेजा!"

मकान के अन्दर से किसी आदमी के पैरों की आवाज़ आई और दरवाजा खुलने में ज़रा देर हुई। करूप्पन् किवाड़ खटखटाता और चिल्लाता रहा।

द्वार खुला। पार्वती आकर करूप्पन् के सामने खड़ी हो गई और बोली—"ज़रा आकर भैंस को तो देखो। आज उसकी दिन-भर तबीयत खराब रही है। बड़ी लातें चलाती है। दूध भी दुहने नहीं देती।" पार्वती ने करूप्पन् को पिछवाड़े के बाड़े में ले जाने का प्रयत्न किया।

"भाड़ में जाय तेरी भैंस! मुझे प्यास लगी है; पानी ला।" यह कहता हुआ वह मकान के अन्दर घुस पड़ा।

इस्माइल मकान के अन्दर दीवार पर से चढ़कर भागने का प्रयत्न कर रहा था।

"ओहो, खाँसाहब मकान के अन्दर क्या कर रहे

हैं ? अरे बदमाश औरत !" करूप्पन् ने चीखकर कहा।

उसने पास में पड़ा हुआ एक फावड़ा उठाया और पूरी ताकत से उसे फेंककर पार्वती के मारा। भागते हुए इस्माइल के उसने एक कुदाली उठाकर इस जोर से मारी कि वह तुरन्त पृथ्वी पर चारों खाने चित्त धड़ाम से जा गिरा और खून से लथपथ हो गया। फिर वह पार्वती पर झपटा। पार्वती चीख मारकर अपने जेठ के झोंपड़े की तरफ भागी। करूप्पन् उसके पीछे दौड़ा, परन्तु शोर-गुल सुनकर इधर-उधर से आते हुए आदमियों को देखकर लौट पड़ा। उसने घूमकर जमीन पर पड़े हुए इस्माइल की ओर देखा। और उसको हिलता हुआ देख, चीख मार-कर, उसपर फिर झपटा कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। परन्तु, लोगों ने आकर उसको पकड़ लिया।

× × × ×

रामपुरा की हवालात में करूप्पन् और पार्वती दोनों अलग-अलग कोठरियों में बन्द थे। थाने के सारे सिपाही पार्वती की कोठरी के सामने से बार-बार गुजरते और उसकी ओर मुस्कराते। जिसको पार्वती से बातचात करने

का मौका मिल जाता था वह बड़े मीठे स्वर में बातचीत करता था। परन्तु पार्वती घबराहट और दुःख के अपार सागर में डूबी हुई थी। जिस समय किसी जङ्गली जानवर को पकड़कर पहली बार पिंजड़े में बन्द किया जाता है उस समय उस जानवर के जो भाव होते हैं उनको यदि समझने की किसी में शक्ति हो तो वह उस किसान स्त्री के भावों को भी शायद समझ सके, जो पुलिस और हवालात की दलदल में फँस गई हो।

"तुम्हें इकबाल कर लेना चाहिए," दरोगा बोला, हम लोगों से जो कुछ हो सकेगा करेंगे।"

"छिपाने के लिए है ही क्या ?" करूप्पन् बोला। "मुझे और कुछ पता ही नहीं है। मैं तो करूमनदुर से शुक्रवार के दिन लौटा था।"

"भलेमानस ! ऐसी उड़ी-उड़ी बातें करने से कुछ फायदा नहीं। तुम्हारी स्त्री ने हम लोगों से सारा किस्सा कह दिया है।"

"बदजात कहींकी ! वही तो इस सारी आफत की जड़है।"

"हाँ··ठीक कहते हो। सारी आफतों की जड़

हमेशा स्त्रियाँ ही होती हैं। अच्छा, अब सब बात ठीक-ठीक कह सुनाओ। डरो मत।"

"मेरे पास और कहने को क्या है? आप कहते हैं कि उसने सब कुछ आपसे कह दिया है।"

हाँ, हाँ। परन्तु तुमको भी सब बात बतानी पड़ेगी। वर्ना सात बरस को चला जायगा, समझा बदमाश!"

"हो जाने दो सात बरस की। मुझे कुछ भी नहीं कहना है।" करुप्पन् बोला।

"जब तक आप सीधे-सीधे बातें करेंगे तबतक यह बदमाश थोड़े ही कुछ बतलावेगा," पुलिस का जमादार बोला। इसके—(उसने कुछ ऐसे शब्द कहे जो वर्णन नहीं किये जा सकते)—......चाहिए। तब यह साला सच बात बतलावेगा।"

"हाँ-हाँ, ठीक है!" दरोगा बोला। "जमादार, तुम्हीं इससे अच्छी तरह से बाद में पूछ लेना।" 'अच्छी तरह' पर उसने विशेष ढंग से जोर देकर कहा।

पार्वती से भी पूछताछ की गई।

"औरत, तू तो बड़ी भली और निर्दोष मालूम पड़ती

है।" जमादार बोला, "सच बताना, क्या क़ादिरखाँ और उसका बेटा तेरे यहाँ बृहस्पति के दिन गये थे ?"

"बाप और बेटा ? नहीं, कभी नहीं।" वह बोली।

"हाँ, हाँ,...इस्माइल अकेला गया था ?" जमादार ने पास खड़े हुए सिपाहियों की ओर आँख मार कर पूछा।

"मालिक, इस तरह की बातें न करिए। मेरे घर मुसलमान का क्या काम ? एक बेचारी औरत से इस तरह के सवाल न करो। मुझे अपने घर जाने दो। मेरे काका और मेरी सास सब घर पर हैं। उनसे पूछकर तुम सब बात ठीक-ठीक जान सकते हो।"

"घर जाने में अभी बहुत देर है। जब तक सब बात ठीक-ठीक न बता दोगी, घर नहीं जा सकतीं।"

"अरे मेरे राम !" पार्वती ने रोकर कहा।

"सीधे-सीधे नहीं बतायेगी !" जमादार बोला, "बड़ी चालाक औरत है। ऐसी-वैसी थोड़े ही है, बोसियों को उल्लू बना चुकी होगी।"

"अरे मालिक ! तुम्हारे भी बहुयें और बेटियाँ हैं। ज़रा मुझपर रहम खाओ।" पार्वती बोली।

"गरम सलाखें तैयार कर लो," जमादार ने एक सिपाही से कहा।

"अरे राम !" पार्वती चिल्लाकर बोली, "मेरे आदमी से पूछलो। वह तुम्हें सब बतला देगा। मुझ अभागी के क्यों पीछे पड़े हो ?"

"हाँ, हाँ, तेरे आदमी से भी पूछेंगे। उससे तो हमने पूछा और उसने हमको सब कुछ बतला भी दिया है। तू ही छिपाती है।" दरागा ने कहा।

"क्या उसने तुम्हें सब-कुछ बता दिया है ?" पार्वती ने बड़े दुःख से पूछा।

"हाँ हाँ, उसने हमको सब कुछ बता दिया है। तू ही सारे मामले की जड़ है।"

"अरे राम !" पार्वती ने हाथ मलकर कहा और पृथ्वी पर पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

"रोने-धोने से क्या होगा ?" जमादार बोला, "इन बातों से हम धोखा नहीं खा सकते। तू बड़ी घाघ औरत मालूम पड़ती है। सच बता, कितने भोले आदमियों को तूने उल्लू बनाकर बर्बाद किया है ?"

"अरे राम ! मेरे भाई, ऐसी बातें न करो। वह तो अपनी किश्त माँगने आया था।"

"ठीक ! अब आई राह पर। देखिए, मैंने आपसे कहा था न ?" जमादार ने दरोगा की तरफ घूमकर कहा, "तू साफ छूट जायगी। सच-सच बता दे। औरतों को कौन जेल भेजना पसन्द करता है ? तेरा मालिक भी थोड़ी-बहुत सजा पाकर छूट जायगा।"

"मुझे आज घर जाने दो। कल मैं तुमसे सब साफ-साफ कह दूँगी।"

"अच्छा।" दरोगा बोला, "इसकी सच-सच बता देने की इच्छा मालूम होती है।"

"एक बार घर पहुँची तो फिर यह कभी सच न बतावेगी," जमादार ने कहा।

"लेकिन हम उसको रात को हवालात में नहीं रख सकते। हमने उसको गिरफ्तार नहीं किया है," दरोगा ने जमादार को एक तरफ ले जाकर कहा।

"अच्छा, साहब ! रात के लिए पहरे में उसे घर भेज देते हैं और कल सुबह फिर यहाँ बुला लेंगे।"

करुप्पन् के बाप ने अपने बड़े लड़के को एक वकील कर लेने पर राजी कर लिया था। करुप्पन् की गाड़ी बेच कर उन लोगों ने खर्च निकाला। जब वह रुपया खर्च हो गया तो पड़ोस के गाँव के एक रिश्तेदार के यहाँ करुप्पन् की भैंस गिरवी रख दी गई। सब पार्वती को कोसते थे, क्योंकि वही इस सब आफ़त की जड़ थी।

मजिस्ट्रेट के सामने वकील ने तीन घण्टे जिरह की और गवाही पेश करके यह साबित करने का प्रयत्न किया कि करुप्पन् जिस दिन यह वारदात हुई उस दिन करूमनदुर में था। करुप्पन् के भाई-बन्द वकील के इस परिश्रम से बहुत खुश हुए।

कादिरखाँ ने हलफ़ खाकर कहा कि मैं करुप्पन् के घर अपने लड़के के साथ अपनी किश्त का तकाज़ा करने गया था। करुप्पन् गुस्से में आकर बुरी-बुरी गालियाँ देने लगा। मैंने उसे फटकारा और अपना रुपयां फौरन माँगा। इसी पर करुप्पन् कुदाल लेकर झपटा और इस्माइल को मारने लगा। मैं बाल-बाल बच गया। मेरा लड़का बीच में आ गया था। इसलिए उसी के सारी चोट लगी।

सौभाग्य से कुदाल सिर पर नहीं पड़ा और दाहिना कान ही कटकर रह गया, नहीं तो मेरे लड़के की जान जाने में कुछ भी शक नहीं रहा था।"

पार्वती भी अदालत में गवाह की तरह आई। उसने हरएक बात से इन्कार किया। वकील ने उससे ऐसा ही करने को कहा था। उसने कहा कि पुलिस ने मुझसे जबरदस्ती तँग करके बयान पर अँगूठा लगवा लिया था।

मजिस्ट्रेट ने करूप्पन् का मुक़दमा सेशन सुपुर्द कर दिया। बैल भी बेच डाले गये। सेशन के लिए एक और नया वकील किया गया। पार्वती अपने पीहर के गाँव में भाई के घर मुक़दमा चलने तक रहने के लिए चली गई।

पार्वती का भाई गरीब आदमी था। बेचारा बड़ी मुश्किल से खींच-तानकर अपना गुजर करता था। उसकी स्त्री नलायी पार्वती पर सख्ती करती थी। पार्वती मकान के सामने के आँगन में खड़ी हुई रो-रो कर अपने भाई से बातें कर रही थी कि इतने में नलायी ने कहा, "भगोड़ी स्त्रियों के लिए हमारे यहाँ जगह नहीं है। हम ईमानदार आदमी हैं और गरीब हैं।"

घर का दरवाजा बन्द करके नलायी खेत को चली गई ।

"बहन, पौरी में जाओ," भाई ने कहा, "गोबर बटोर कर खेत पर ले जाओ ।" पार्वती बहुत मेहनत करती थी । मुफ्त की रोटियाँ तोड़ना नहीं चाहती थी । परन्तु फिर भी उसकी भावज उससे बड़ी क्रूरता का व्यवहार करती थी । वह जितना बनता था पार्वती का अपमान करती थी और जितनी क्रूरता उससे बन सकती थी करती थी। पार्वती हृदय पर पत्थर रखकर सब-कुछ सहती थी ।

एक दिन एक सिपाही आया और पार्वती से बोला कि मेरे साथ चलो । बड़ी अदालत में करूप्पन् का मुक-दमा पेश होने वाला है । पार्वती इतनी दुखी थी कि उसे यह सुनकर एक प्रकार का आराम मिला । सिपाही लम्बे कद का बड़ी-बड़ी मूछों वाला एक दयावान मुसलमान था । उसने पार्वती का अपमान नहीं किया, उससे पिता की तरह बातचीत की ।

"जो कुछ हुआ हो सच-सच और साफ-साफ बता देना ।" वह चलते-चलते पार्वती से बोला, "जज साहब सम्भव है गरीब पर दया करें ।"

"साफ-साफ मैं कैसे कहूँ ?" पार्वती बोली, "कैसी शरम की बात है।"

"काहे की शरम ? दुनिया में कितने आदमी ऐसा काम करते हैं। कभी-न-कभी हरएक शख्स से गलती हो सकती है। खुदा हमेशा हमारी निगहबानी करता है। परन्तु कभी-कभी वह हमें फिसल भी जाने देता है। उसी-की मर्जी से सब-कुछ होता है।"

"क्या तुम मुझे सब बात साफ़-साफ़ कह देने की सलाह देते हो ?" पार्वती ने फिर पूछा, "मैं बिरादरी से निकाल दी जाऊँगी। मेरा आदमी मुझे घर में घुसने नहीं देगा। फिर मैं क्या करूँगी ?"

"तुम्हारे आदमी को छः साल की सजा दी जायगी। अगर तुम सच-सच कह दो तो जज शायद छः महीने की सजा करके ही छोड़ दें। एक पिछले मुकदमे में ऐसा ही हुआ था। तुम्हारा आदमी अगर छूट गया तो उलटा तुम्हारा अहसान मानेगा। पांत करके बिरादरी में मिल जाना। कुछ भी हो, हमेशा सच बोलने से फायदा ही होता है।"

पार्वती चुप हो गई। उसके हृदय में किसीने कहा, 'सच बोल।' परन्तु एक ही क्षण में दूसरी आवाज ने पहली आवाज को दबा दिया और वह डर और घबराहट के मारे काँप उठी।

सिपाही ने पार्वती को इरोड़ स्टेशन पर रेल में चढ़ा दिया। पार्वती का अपने जीवन में रेल पर चढ़ने का यह पहला ही मौका था। स्टेशन की भीड़ और कौतूहल उत्पन्न करनेवाला कोलाहल उसे अपने जीवन के शोकान्त-नाटक का एक दृश्य-सा लगता था।

जैसे ही गाड़ी चली, गाड़ी के किसी कोने में से एक हँसमुख छोकरा निकलकर खड़ा हो गया और गाने लगा। वह अन्धा था। चीथड़े पहने हुआ एक छोकरा और भी उसके साथ था। दोनों मिलकर गाने लगे।

"बदमाशो, तुम किधर छिपे थे ?" सिपाही बोला। छोकरे गाते-गाते मुस्कराने लगे। उनके गाने में रस था। गवैयों से अधिक रस। जाने कहाँ से, कैसे, यह भीख माँगने वाले छोकरे गाना सीख लेते हैं। गाना खत्म हो जाने पर दूसरा छोकरा अन्धे का हाथ पकड़कर गाड़ी-भर

में फिराने लगा। अन्धा हाथ फैलाये हुए था और उसके हाथ पर हरएक मुसाफिर निकाल-निकाल कर पैसे इस प्रकार रखने लगे, मानों वे कोई प्राचीनकाल से चले आने वाले कर को भर रहे हों। पार्वती ने भी अपनी साड़ी के कोने में बँधी हुई एक गांठ का खोला और उसमें से एक पैसा निकालकर अन्धे के हाथ पर रख दिया। सारे दिन उसके कानों में उन छोकरों का राग गूँजता रहा। राग का गूढ़ार्थ तो उसकी समझ में नहीं आया, परन्तु उसका एक पद अन्धे लड़के की मनमोहनी वेदनापूर्ण आवाज उसे बार-बार याद आता था। उस पद का अर्थ यह था, "मैंने दुनिया से छिपाकर बड़ा पाप किया है। क्या मेरे जन मुझे स्वीकार करेंगे ? क्या माता मुझे छोड़ देगी ?"

× × ×

सेलम में पार्वती को एक छोटे से ढाबे में ले जाकर सिपाही ने आधी खूराक दिलवा दी। ढाबेवाली ने पार्वती से सलेम आने का कारण पूछा। पार्वती ने कहा—"मुझे अदालत में हाजिर करने के लिए ले आये हैं।" इतने में ढाबे में एक भीड़ घुसी, जिसमें अधिकतर स्त्रियाँ थीं। वे

सब लङ्का में चायबगीचों में काम करने के लिए ले जाई जा रही थीं।

मुक़द्मे की पेशी उस दिन नहीं हुई, क्योंकि पिछले सप्ताह से चलने वाला एक और क़त्ल का मुक़द्मा अभी तक चल रहा था। जब करुप्पन् का मामला पेश हुआ तब भी पार्वती को तलब नहीं किया गया। सरकारी वकील ने कहा कि गवाह हमारे ख़िलाफ़ हो गया है। करुप्पन् के वकील ने कहा कि तब तो हम उसको पेश करेंगे। और उसने इजलास से प्रार्थना की कि पार्वती रोक ली जाय। शाम को करुप्पन् का भाई पार्वती को अपने वकील के पास ले गया। वकील ने भी पार्वती से वही कहा, जो मुसल-मान सिपाही ने उससे रास्ते में कहा था।

पार्वती अपने पति को बचाना चाहती थी। परन्तु अपने पाप को स्वीकार करने का विचार आते ही वह काँप उठती थी।

"जैसा भगवान बतलायेगा वैसा करूँगी।" आख़िर-कार वह बोली।

"कम्बख्त !" करुप्पन् का भाई बोला, "भगवान् का नाम लेती है ! लगाओ इसके सिर पर जूते।"

"जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी।" पार्वती ने अपने जेठ से कहा, "औरत यानी बेचारी कर ही क्या सकती है !"

वकील यही तो चाहता था। उसने सबको बाहर निकाल दिया और करुप्पन् के भाई से अकेले में बातें करता रहा।

दूसरे दिन कचहरी में पार्वती एक पेड़ के नीचे अन्य मनुष्यों के साथ बहुत देर तक बैठी हुई इन्तज़ार करती रही। अन्त में उसके कानों में, 'पार्वती, पार्वती हाज़िर है'?' की एकाएक आवाज़ आई और वह चौंककर उठ बैठी। चपरासी उसको इजलास में ले गया। वहाँ का दृश्य देख कर पार्वती के होश उड़ गये। पश्चिम की तरफ़ उसकी दृष्टि गई तो उसने देखा कि कटघरे में जंगली जानवर की तरह खड़ा हुआ करुप्पन् उसकी ओर एकटक घूर रहा था। उसकी दाढ़ी और बाल इतने बढ़ गये थे कि उसको पहचानना कठिन हो गया था। दो महीने हवालात में रह चुकने पर कोई भी ग़रीब किसान हत्यारा-सा दीखने लगेगा।

"हाय, मेरे ही कारण यह सब कुछ हुआ!" पार्वती ने अपने मन में कहा और दुःख से उसकी छाती फट उठी। बड़ी मुशकिल से कटघरे के सहारे वह इजलास में सीधी खड़ी रह सकी। पेशकार ने जिस समय एकदम चिल्लाकर कहा कि हलफ़ उठाओ, तो पार्वती का सिर चकरा उठा और उसकी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया।

"मैं भगवान् को साक्षी देकर कहती हूँ कि मैं सच कहूँगी। उस रोज़ शाम को मैं रसोई कर रही थी......" पार्वती ने कहना प्रारम्भ किया।

"ठहरो," पेशकार ने क्रोध से चिल्लाकर कहा।

"मालूम होता है कि इसने बयान खूब पढ़ लिया है।" जज ने सरकारी वकील की तरफ़ देखकर कहा।

"परन्तु सिखाये तोते दरबार नहीं चढ़ते हैं।"

इस वाक्य पर खूब क़हक़हा लगा। सरकारी वकील खिलखिला कर हँस पड़ा और अन्य वकीलों ने भी हँस-कर उसका साथ दिया। करूप्पन् का वकील भी मुस्क-राने लगा।

"देख, जो मैं कहता हूँ वह कह।" पेशकार ने कड़क

कर कहा। पार्वती बेचारी आश्चर्य में पड़ गई कि क्या जो कुछ वकील और अपने जेठ से पाठ सीखा है उसे भूल जाना पड़ेगा और जो यह पेशकार कहेगा वही कहना पड़ेगा? हलफ़ ले चुकने के बाद पार्वती से जिरह शुरू हुई। अस्वाभाविक और विचित्र ढंग से पूछे जाने वाले प्रश्न प्रायः ग्रामीण पार्वती की समझ में नहीं आते थे। वह बोली—"मैं रसोई कर रही थी। इस्माइल ने आकर बुरे ढंग की बातचीत करना प्रारम्भ की। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने इस्माइल का बुरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। इसी बीच में मेरा पति आ पहुँचा और उसने क्रोध से गरजकर मुझपर फावड़ा फेंका। मैं दौड़ कर बाहर निकल आई और डर के मारे चिल्लाने लगी। मुझे नहीं मालूम कि उसके बाद क्या हुआ। परन्तु मैंने इस्माइल को घर में से निकलकर भागते और उसके सिर में से खून बहते देखा।" वकील ने पार्वती से इसी प्रकार बयान देने को कहा था।

"कम्बख्त!" करूप्पन् कटघरे में से चिल्लाया। उसे अभी तक आशा थी कि उसका उस दिन करमनदुर में

होना साबित हो जायगा।

करूप्पन् के वकील ने उसके पास जाकर उसके कान में कुछ कह दिया, जिससे वह सन्न हो गया। मुक़दमा ख़त्म होने पर असेसरों ने अपनी राय दी कि करूप्पन् ने क्रोध में आकर इस्माइल के सख्त चोट अवश्य लगाई, परन्तु उसका क़त्ल करने का इरादा नहीं था। जज ने फ़ैसला दूसरे दिन के लिए मुल्तवी कर दिया। दूसरे दिन इजलास में फ़ैसला सुनाया गया। जज ने कहा कि मेरी राय असेसरों के विरुद्ध है। करूप्पन् की इच्छा क़त्ल करने की थी। मैं क़ादिरखाँ और इस्माइल को सच्चा समझता हूँ। वे करूप्पन् से अपनी क़िश्त का तकाज़ा करने गये थे। करूप्पन् नशा करने का आदी था और उसने क्रोध में आकर कुदाल लेकर उन दोनों पर हमला किया। सौभाग्य से और लोग आ गये और वे दोनों बाप-बेटे मरने से बाल-बाल बचे। पार्वती का बयान मानने लायक़ नहीं है। एक तो करूप्पन् उसका पति है और वह स्वभावतः उसे बचाना चाहती है। दूसरे उसने मजिस्ट्रेट और पुलिस के सामने भिन्न-भिन्न बयान दिये हैं, इसलिए भी उसकी बातें

मानने के काबिल नहीं हैं। अन्त में जज ने करुप्पन् को छः साल की सख्त सजा का हुक्म सुना दिया। और इस बात की भी सिफारिश की कि वह इजाजत लेकर पार्वती पर झूठी गवाही देने के लिए मुक़दमा चलाए।

करुप्पन् हुक्म सुनकर चिल्लाने लगा, "मेरी औरत ने मुझे धोखा दिया। यदि औरत आदमी की आँखों में धूल फेंके तो क्या आदमी को चुपचाप खड़े-खड़े देखना चाहिए ?'

"ले जाओ इसको !" जज ने कहा। सिपाही उसको यह कहते हुए ले चले कि, बकता क्यों है, ये सब बातें अर्जी में लिखाकर हाइकोर्ट में अपील भेजना।

× × ×

मुकदमा खत्म हो जाने के बाद पार्वती की उसके जेठ या और किसीने कोई खबर नहीं ली। बड़ी मुश्किल से बेचारी किसी तरह रामपुरा पहुँची। बूढ़े मुसलमान सिपाही को उसपर दया आई और वह उसको पहुँचाने चला।

" तुमको सच-सच बोलना चाहिए था। और सब-कुछ शुरू में ही कह देना चाहिये था।" वह बोला, "जज ने तुम्हारा विश्वास नहीं किया, क्योंकि तुमने मजिस्ट्रेट के

यहाँ कुछ और ही बयान दिया था और यहाँ भी तुमने सब बात सच्ची-सच्ची नहीं बताई।"

पार्वती सुन रही थी। परन्तु उसकी समझ में कुछ नहीं आता था। जिस समय लोग रामपुरा पहुँचे रात काफी जा चुकी थी। सिपाही ने पार्वती से कहा कि बाहर के बरामदे में सो रहो। सवेरे उठकर अपने भाई के गाँव में चले जाना। रात-भर पार्वती को नींद नहीं आई। फिर अपनी भावज के सामने जाने को उसकी हिम्मत नहीं होती थी। उसकी दुनिया खत्म हो चुकी थी। भगवान् ने भी उसको त्याग दिया था। आत्मघात करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग उसके सामने नहीं था। बस यही एक बूटी उसके पास थी, जिसको उपयोग में लाकर वह इस कष्टमय जीवन से बच सकती थी। इस दवा को उसके पास से कोई नहीं छीन सकता था। उषाकाल की ठण्डी ठण्डी वायु चली। रातभर की जगी हुई थकित दुखी: पार्वती की आँख झपक गई। वह एक करवट पड़ी सोती रही। प्रातःकाल छः बजे सिपाही उठकर आया तो उसने देखा कि पार्वती मजे से पड़ी खुर्राटे भर रही है। वह सोचने लगा, "अपने पति

को जेल भेजकर यह औरत बड़ी निश्चिन्त है। इन धोखे की टट्टी औरतों पर विश्वास करना बड़ी मूर्खता है।"

पार्वती एक बच्चे का रोना सुनकर उठ बैठी। वह स्वप्न देख रही थी कि उसका बच्चा दुःख से चीख रहा है। उठ बैठने के बाद भी कुछ क्षण तक उसे यही भ्रम बना रहा कि उसीका बच्चा रो रहा है। फिर उसे खयाल आया कि 'अरे! मेरा बच्चा तो बहुत दिन हुए मर गया और मैं अब पृथ्वी पर बिना घर की निर्वासित खोई हुई स्त्री हूँ।'

वह उठकर बैठी तो उसने देखा कि एक छोटा-सा काले रंग का छोकरा सामने खड़ा है। वही मुंह पर हाथ रखकर बच्चे के रोने की सी आवाज निकाल रहा था। एक बार वह 'माँ' को आवाज करता था और फिर बिलकुल ठीक बच्चे की आवाज की नकल करता था। जैसे ही पार्वती उठकर बैठी वह चुप हो गया और एक पैसा माँगने लगा।

"लड़के, तुम्हारा घर कहाँ है?" पार्वती ने पूछा।

"एक पैसा दे दो।"

"तुम्हारे बापका नाम क्या है?" पार्वती ने फिर पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" लड़का बोला।

"क्या तुम्हारे माँ भी नहीं है?" पार्वती ने पूछा।

"है, परन्तु वह मुझे सुअर वाले के साथ छोड़कर चली गई।"

"तुम्हें खाना कौन देता है?"

"खाना मैं खुद कमाकर खाता हूँ। मुझे जो कुछ पैसे मिलते हैं मैं सुअर वाले को दे देता हूँ। कभी-कभी वह मुझे खिलाता है, परन्तु जब पैसे दे देता हूँ तब।"

"तुमने यह बच्चे की बोली कहाँ से सीखी?"

"यह! यह मैंने और मेरे एक साथी ने तंजोर में सीखी थी। मुझे पैसा दे दो, अब मैं सुअर वाले के पास जाऊँगा।"

"सुअर वाला कौन है?"

"वह इस गाँव में आया है। सुअर बेचता और खरीदता है। हम लोग एक जगह से दूसरी जगह फिरते रहते हैं।"

इतने में सिपाही निकल आया और उसने छोकरे को धमकी देकर भगा दिया।

"ये लोग चोर हैं," सिपाही बोला। दिन में इस

प्रकार आकर टोह लगा जाते हैं और फिर रात को चोरी कर ले जाते हैं । मालूम होता है, तुम रात को खूब सोई?"

"ईश्वर तुम्हारा भला करे ! तुमने मेरी मदद पिता की तरह की है ।" यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगी ।

सिपाही के दिल पर ज़रा भी असर नहीं हुआ ।

"अब तुम अपने भाई के गाँव को चली जाओ," उसने कहा । "देर करोगी तो धूप चढ़ आवेगी और तुम्हें रास्ते में तकलीफ होगी ।"

पार्वती दोपहर के समय, भूखी, अत्यन्त थकी हुई, यह आशा करती हुई अपने भाई के यहाँ पहुँची कि शायद भावज का हृदय मेरी बुरी हालत देखकर कुछ पिघल जाय। परन्तु, अफसोस, उसके भाई के घर सारी खबर पहले ही पहुँच चुकी थी । भाई खेत पर चला गया था और भावज दरवाजे पर खड़ी थी ।

"आ गई फिर ?" वह बोली, "भाग यहाँ से निगोड़ी पापिन कहीं की ! यहाँ ऐसी पिशाचिनी के लिए घर नहीं है, जो अपने खाविन्द को खाकर मुसल्लों के संग फिरती है । क्या तू मेरे घर में बैठकर मेरे सीधे-सादे

खाविन्द का भी खून चूसना चाहती है ? मेरे बेटे-बेटियाँ हैं, और उनके साथ मैं तुझे कभी न रक्खूँगी। जाओ उसी आदमी के पास, जिसको तुमने अपना नया खसम बनाया था। यहाँ तुम्हारे लिए जगह नहीं है।"

"भैया ! भैया !!" पार्वती निराश होकर चिल्लाई। उसने समझा कि भाई मकान के अन्दर होगा। परन्तु कुछ जवाब नहीं आया। "नहीं बोलोगे ? तुमने भी मुझे छोड़ दिया ?" वह रोकर बोली, "भगवान्, मेरी सहाय करो।"

वह फूट-फूट कर रोने लगी और उसी प्रकार भूखी और थकी हुई वहाँ से चल पड़ी।

× × ×

सूरज खूब तप रहा था। परन्तु पार्वती को अब न तो भूख ही मालूम होती थी, और न गरमी ही लगती थी। उसके सूखे हलक और ओठों से राम-नाम—जैसा टूटा-फूटा वह जानती थी—निकल रहा था। वह जल्दी-जल्दी एक दूसरे गाँव की तरफ चली जा रही थी, जहाँ पहाड़ी पर एक बड़ा मन्दिर था।

पहाड़ी पर चढ़ने लगी। परन्तु वह इतनी थकी हुई थी कि कुछ ही कदम चढ़कर एक चट्टान की अर्धछाया में धड़ाम से गिर पड़ी और उसे मूर्छा आने लगी।

कुछ समय के बाद वह उठी और फिर चढ़ने लगी। पर मन्दिर के पास पहुँच तो गई, परन्तु अन्दर नहीं घुसी। मन्दिर के सामने वह साष्टांग लेट गई और प्रार्थना करने लगी। फिर वह स्वस्थ चित्त होकर उठी और वहाँ से मन्दिर से भी अधिक ऊँची एक दूसरी चोटी पर गई। चढ़ाई बड़ी ऊँची थी, परन्तु पार्वती में न जाने कहाँ से एक नई शक्ति आगई थी। वह चोटी पर पहुँच गई। इतनी ऊँचाई थी कि नीचे देखने मात्र से चक्कर आने लगता था। चोटी के पश्चिमी किनारे से उसने नीचे देखा।

"जग की मैया, मुझे माफ करो! अपनी गोद में ले लो!" यह कहकर वह चिल्लाई और आकाश में कूद पड़ी।

एक क्षण का सुख और शान्ति। फिर पृथ्वी और आकाश घूम उठे। ओह! कैसा शान्तिमय और सुन्दर। फिर एक भयंकर धड़ाका हुआ, जैसा कि उसने अपने

जीवन-भर में कभी नहीं सुना था। कोई चीज उसके दिमाग में फट पड़ी और फिर अनन्त शान्ति......!

पार्वती की दुःखी आत्मा पिंजरे में से उड़ गई !
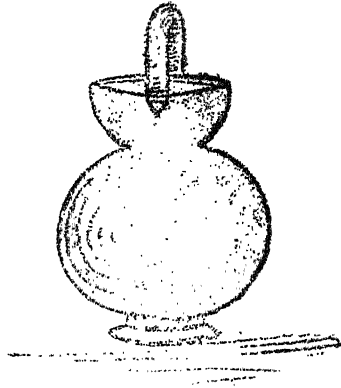
प्रायश्चित्त

कुट्टी के लड़के चिल्ला उठे,—"हो, इसने कुँए में अपना डोल डाल दिया था। मारो अभागी को! मारो लातों के कचूमर निकाल दो। बस वहीं मारडालो। तोड़ो इसका डोल फोड़ डालो। इसकी हड्डी-पसली तोड़ डालो। सत्यानाशी ने कुँआ ही अशुद्ध कर डाला।"

डोल तो पलक मारते ही टुकड़े-टुकड़े हो गया और उसपर लात-मुक्के बरसने लगे। बेहोश होकर वह जमीन पर गिर पड़ी।

× × ×

"ग़जब की बात है। मेरे दिमाग़ से तो उन फ़ूलों की सुगन्ध निकलती ही नहीं है। लोग कहते हैं कि जब कोई मरता है तो मरने के साथ ही वह खत्म नहीं हो जाता बल्कि उसका जन्म फिर होता है। कौन जानता है कि यह अछूत लड़की दूसरी देह में मेरी माँ ही हो?"
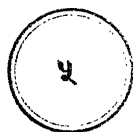
१

गाँव के बाहर इमली की बगिया में लड़के बन्दरों को मार-मार कर खेल रहे थे। बड़े लड़कों को तो इसमें बड़ा मज़ा आ रहा था। मगर छोटे लड़कों और बन्दरों की पारी-पारी से आफ़त आ जाती थी। पर शोरोगुल से निर्बलों को भी साहस आ जाता था। और वह खेल बहुत देरतक चलता रहा।

एकाएक एक तरफ़ कोने में से बड़े ज़ोर की चीख सुनाई पड़ी। लड़के दौड़ पड़े। देखा, एक लड़के पर एक जबरदस्त बन्दरी ने हमला कर दिया है। अरे, यह तो गाँव-भर का प्यारा मुकुन्दन है! उस घबराहट चिल्लाहट और शोरगुल के बीच भी यह मालूम होने में देर न लगी कि उस बन्दरी के बच्चे को लड़कों ने खदेड़ा था, और वह पेड़ पर से गिर पड़ा था। मुकुन्दन ने बच्चे को पकड़ लिया, और उसकी माँ अपने बच्चे को पकड़ने वाले पर टूट पड़ी। बन्दरी ने मुकुन्दन का गला पकड़ लिया और उसके मुँह और हाथों को नोचने लगी। लड़के ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर मुकुन्दन से कह रहे थे—अरे बच्चे को छोड़ दे, बच्चे को छोड़ दे।

पर मुकुन्दन के होश-हवास दुरुस्त न थे। उसने समझा ही नहीं कि लड़के क्या कह रहे हैं। किसी लड़के को इतनी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि मुकुन्दन को जाकर छुड़ाते। क्रोधान्ध बन्दरी मुकुन्दन को चोट लगाती ही जा रही थी। इतने में 'परिया' (अछूत) का लड़का भरी कूदकर आगे बढ़ा और उसने मुकुन्दन के हाथ से बच्चे को छीन लिया।

अब बन्दरी मुकुन्दन को छोड़कर मरी पर झपटी। मरी ने बच्चे को ज़मीन पर फेंक दिया और एक लकड़ी लेकर खड़ा हो गया। बन्दरी अपने बच्चे को अपनी आड़ में करके पीछे हटी। बच्चा माँ के पेट में सटकर लटक गया, और बन्दरी भाग कर पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर जा बैठी।

इधर मुकुन्दन बेहोश पड़ा था। लड़के इतने डर गये थे कि मुकुन्दन के पास कोई ठहरा भी नहीं। उसकी सेवा-सम्हाल कौन करे ? लड़के चिल्लाते हुए भागे। 'मुकुन्दन मर गया !' 'मुकुन्दन मर गया !' 'बन्दर ने मुकुन्दन को मार डाला !'

मरी का छोटा भाई भी भागा जा रहा था। मरी ने उसे बुला कर कहा—

'चिन्नन, जा घर में माँ से माँग कर पानी ले आ।'

यह कहकर मरी मुकुन्दन के पास बैठ गया और उसका खून पोंछने लगा।

थोड़ी देर बाद चिन्नन मिट्टी के बरतन में पानी लेकर आया। मरी ने वह पानी मुकुन्दन के मुँह पर छिड़का,

जिससे मुकुन्दन ने आँखे तो खोलीं, मगर खून वैसे ही ज़ोरों से बहता रहा।

मरी ने कहा, 'चिन्नन, चलो, मुकुन्दन की माँ के पास उसे हम हाथ लगाकर पहुँचा आवें।'

२

मुकुन्दन की माँ विधवा थी। उसके पति को ज्वर आया था। पूरे तीस दिन ज्वर रहा। गाँव के पण्डित जी की दवा होती रही मगर ज्वर शान्त नहीं हुआ। शान्त हुआ तो आखिर जान लेकर ही। उसे परमात्मा का भरोसा था। बेचारी विधवा ने परमात्मा पर अपना भार छोड़कर बड़े धैर्य से विपत सही। पति गांव में अपने खदुकों (क़र्ज़दारों) को जो कुछ क़र्ज़ देकर मरा था, वह सब उसने इकट्ठा किया और खेत लगान पर दे दिया। जिसने खेत लिया था वह समय पर लगान चुका दिया करता था। इस तरह वह बेवा किसी तरह घर चलाने लगी।

मुकुन्दन शाला में भेजा गया। गाँव में कहने-सुनने को एक पाठशाला भी थी और उस समय के लिए वही काफ़ी थी। घर पर वह मुकुन्दन को राम और हनुमान की

तथा महाभारत की कथायें सुनाया करती थी। वैसी सुन्दरी और अकेली विधवा के लिए ज़िन्दगी भारी तो थी ही। मगर परमात्मा में विश्वास रखकर और व्रत-नियमों में लगी रहकर वह दिन काटती चली जाती थी। मालूम होता था, मानों साक्षात् परमात्मा उसकी खोज-खबर लिया करते थे।

वह स्नान के बाद पूजा-पाठ करके चौके के पास बैठी ही थी कि मरी और चिन्नन मुकुन्दन को लेकर पहुँचे, और उसके आगे रख दिया। मुकुन्दन को खून से तर देखकर वह उसकी ओर झपटी।

'अभागे, इसका तुमने क्या किया है?' वह चिल्ला उठी। यहाँ पर मुकुन्दन की माता का डरकर अपने बच्चे की ओर झपटने में और अपने बच्चे के लिए बन्दरिया के मुकुन्दन पर चोट मारने में विलक्षण सादृश्य था।

थोड़े में मरी ने सारी कथा कह सुनाई। माता का हृदय कृतज्ञता से भर गया और वह हँसकर बोली, 'बेटा तुम कौन हो?'

मरी और चिन्नन पीछे हटते हुए बोले, 'हम लोग अछूत हैं माई !'

यह सब भूलकर वह चिल्ला उठी, "अछूत लड़के ! तूने यहाँ आने की हिम्मत हा कैसे की अभागे ? और यहाँ चूल्हे के पास ! हाय भगवान्, अब मैं क्या करूँगी ?"

उसने एक बड़ी-सी चैली उठा ली और चिन्नन की ओर उसे चलाया। मरी कूद कर बीच में आ गया, और खुद ही वह चोट सह ली। मरी गिर पड़ा। चिन्नन चिल्लाता हुआ निकल भागा।

अब तो मुकुन्दन की माँ घबराकर और भी चिल्लाने लगी, "पिशाच ने मेरा घर खराब कर दिया, चौका अशुद्ध कर दिया, और ऊपर से गाँव-भर में मेरी यह दुर्गति कहता फिरता है। हाय रे भगवान् !"

मरी उठ खड़ा हुआ। झुककर घायल पैर को पकड़े हुए, जिसमें बहुत दर्द हो रहा था, बोला, 'माई, हमने तो तुम्हारे लड़के को बन्दरी से बचाया, जो उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालती और तुमने उलटे मेरी टाँग तोड़ दी !"

चूल्हे में जा तू और तेरी बन्दरी, अब इस पाप से मैं

कैसे छूटूँगी ? तेरी तो छाया से पाप लगता है और तू मेरे घर में घुस आया था—नहीं, नहीं, ठेठ चौके में और ठाकुर-जी के घर तक में घुस आया ! हाय रे राम सारा सत्यानाश हो गया ! हाय राम, हाय भगवान्, हाय कृष्णचन्द्र ! इस पाप से कैसे छुटकारा होगा ?

मगी अभी वहीं खड़ा-खड़ा पैर मल रहा था। उसका पैर बहुत ही दुखता था।

'निकल सत्यानाशी, तुरत निकल ! वह चिल्लाने लगी और उसके पैर में एक लकड़ी और मारी। बेचारा बिलबिला उठा और बाहर सड़क पर निकल भागा।

इधर सामने दरवाजे पर भीड़ आ जुटी थी।

लोग घबराकर चिल्ला उठे, हैं, इस घर में यह साला अछूत घुस गया था !'

दूर पर सड़क के परले किनारे मगी की माँ चिल्ला रही थी—'मेरे बच्चे, को मेरे लाल को, मत मारो !'

३

दो साल बीत गये। मुकुन्दन बड़ा हो गया। दो मील दूर पर वह कमलापुर के मिडल स्कूल में अब पढ़ने जाता

है। वेलमण्ट्टी से दो और लड़के वहाँ पढ़ने जाते थे, इसलिए मुकुन्दन को उनका साथ रहता था। बन्दर की कथा तो बिलकुल भूल ही गई थी। हाँ, मुकुन्दन के चेहरे पर उस घाव का एक लम्बा-सा दाग़ रह गया था।

मरी की माँ उसे इसके लिए कभी क्षमा नहीं कर सकी कि वह क्यों ऊँची जाति के लड़के के मामले में दख़ल देने गया। उसे और जितनी तकलीफ़ें हुई, जो विपत्तियाँ आई, सब कुछ वह इसी एक पाप के कारण मानती थी। उसने बड़ी मुश्किल से कौड़ी-कौड़ी जोड़कर बकरे ख़रीदे और लगातार तीन साल तक एक-एक बकरा मरियाई (अछूतों की देवी) के वार्षिक पूजन में बलि देती गई, जिसमें देवी का कोप कुछ शान्त हो। मगर देवी कब सुनती थी? पहले इसका पति हफ्ते में एक बार ताड़ीखाने जाता था, अब तो वह रोज़ ही ताड़ी पीने लगा। गुरबत और तरद्दुद बढ़ने के साथ ही साथ यह आदत भी दिन-ब-दिन और भी बढ़ती ही गई। बेचारी को अब दिन-दिन भर बन बन लकड़ी चुनने के लिए घूमना पड़ने लगा। इस तरह जो दो-चार लकड़ी वह चुनकर लाती उन्हें

बेंच कर दो पैसे पाती। पर वह अभागा उन्हें भी छीनकर लेजाता और उनकी ताड़ी पी जाता! लड़के भूखे सो रहते, फिर वह नशे में गिरता पड़ता घर पर खाने के लिए आता। मगर, यहाँ खाने को क्या रक्खा होता था? इसलिए, उलटे इस बेचारी को मार भी खाना पड़ती थी!

मगर मार खाते-खाते वह लड़कों को धीरज देती थी, 'मरी, चिन्नन, बेटा! अब कुलीवाले के आते ही हम लोग केरडा (लंका) चले जावेंगे, मरता रहे यह अभागा यहीं ताड़ी-खाने में!'

उस साल पानी पड़ा ही नहीं; सभी खेत सूख गये। फ़सल चौपट हो गई। ग़रीबों के लिए कहीं कोई काम न रहा, सभी के लिए ये दिन मुश्किल के थे। मगर परियों और चक्कालियों की तो सबसे बुरी गत थी। उनपर तो मानों आस्मान ही फट पड़ा था। लंका के चायबागानों के लिए कुली भरती करने को कंगनी आया, ऐसे समय में भूखों मरते लोगों ने उसका स्वागत देवता के समान किया।

जमींदारों ने कहा, "ये सब अनजान लोगों को फुसला कर बहकाने, चुराकर लेजाने, आये हैं। बेचारों को झूठी-

झूठी बातें सुनाकर ठग लेते हैं।" मगर तोभी दुर्भाग्य के मारे मुसीबतजदा मर्द और औरत उसके साथ बड़ी खुशी गये। मरी की माँ ने भी उसीमें मुसीबत का अंत देखा। वह अपने लड़कों को भी साथ लेती गई। पहले तो उसका पति घर पर ही रहने वाला था। मगर चलने-चलाने के समय वह भी साथ हो लिया। वह बार-बार कसमें खाता गया कि अब फिर शराब छुऊँगा भी नहीं।

४

तीन साल और बीत गये। मुकुन्दन ने अपनी लोअर शिक्षा की पढ़ाई समाप्त की। इसमें उसकी बड़ी तारीफ हुई। वह अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था। उसने सोचा, बस अभी दौड़े चले और माँ को परीक्षा का फल सुनावें। इधर लड़के हठ कर रहे थे कि पास की पहाड़ी पर मंदिर देखने चलें और दिन-भर वहीं खेल होता रहे। मुकुन्दन इसपर राजी होता ही नहीं था। एक बड़े लड़के ने कहा—

'मुकुन्दन, तुमसे तो लड़की ही भली। तुम्हें हमारे साथ चलना ही होगा। अगर कहीं देर हो गई, तो, तुम्हारे घर पर मैं आप तुम्हें पहुँचा आऊँगा। चलो!'

'हाँ हाँ, चलो, चलो।' एक साथ कई लड़के बोल उठे। मुकुन्दन को सबकी बात रखनी पड़ी और यह मण्डली चल पड़ी।

उस दिन कोई पर्व था। बहुत-से यात्री आये थे। लड़कों को खूब मज़ा आया। उस दिन वे खूब खेले। उनमें एक लड़के का बाप रुई का व्यापारी था, जो अपने लड़के को जी-जान से प्यार करता था। उस लड़के के पास पाँच रुपये का एक नोट अपने निजी खर्च के लिए था। फिर और क्या चाहिए? लड़कों ने मिठाई खरीदकर खाई और दिन भर धूप में धमा-चौकड़ी करते रहे।

पहाड़ी से उतरते समय मुकुन्दन ने कहा, "रामकृष्ण, मेरा तो मारे प्यास के गला सूखा जा रहा है।"

लड़के बोल उठे, "यहाँ आस-पास में तो पानी का नाम-निशान भी नहीं है।"

इसपर लड़का बोला, "कैसे मूर्ख हो! क्या तुम्हें हनुमान-पोखरे का पता नहीं है? वह यहीं पर तो है।"

सचमुच वहीं पास में एक चट्टान पर, हनुमानजी की बहुत बड़ी मूर्ति चट्टान काटकर बनी हुई थी। उसी के

पास एक छोटी तलैया भी थी। उसमें पानी बड़ा गन्दा था; मगर मुकुन्दन ने खूब डटकर पिया, क्योंकि वह बहुत प्यासा था। फिर कुछ देर तक लड़के हनुमानजी की पूंछ को सराहते रहे, इसके बाद वहाँ से रवाना हुए। मुकुन्दन के घर पहुँचते-पहुँचते अन्धेरा हो गया था, घर-घर दीये जल गये थे। मुकुन्दन की बोली सुनते ही, उसकी माँ दर्वाज़ा खोलने को लपकी।

"बेटा!" वह बोली, "मैं तो सारे दिन तेरा आसरा देखती रही! तू आज कहाँ चला गया था? आखिर तुझे इतनी देर कहाँ हुई? तैंने तो सवेरे कहा था कि परीक्षा-फल सुनते ही उठकर घर चला आऊँगा?"

"हाँ, माँ, कहा तो था, पर हम लोग उस पहाड़ पर मन्दिर देखने चले गये। माँ, हम सब लड़कों ने आज खूब मज़ा किया। मैं तो लौट आना चाहता था, पर किसी-ने आने ही नहीं दिया।" मुकुन्दन ने अपने भोलेपन से कहा।

'खैर' आश्वासन देते हुए माँ ने कहा, "उसके लिए कोई फ़िक्र नहीं। पर, हाँ, तुम्हारी परीक्षा का क्या हुआ, बेटा?"

"माँ, मैं पहले दर्जे में पास हुआ हूँ, और सब लड़कों में अव्वल रहा हूँ।"

माता ने मुकुन्दन को छाती से लगा लिया और रोने लगी। उस समय उसके मन में क्या-क्या विचार उठ रहे थे, यह शायद उसके समान कोई विधवा-माता ही समझ सकती है।

५

अभी-अभी हमने इस घर में हँसी-खुशी देखी थी, आनन्द यहाँ खिल रहा था। मगर, इन कुछ दिनों में ही, अब यह क्या हो गया? सारा घर उजाड़-सा क्यों हो गया?

अरे, उस पहाड़ी मंदिर से लौटने की रात ही बेचारा मुकुन्दन बीमार पड़ गया। उसे क़ै (वमन) और दस्त होने लगे, मगर किसीने यह नहीं समझा कि उसे हैज़ा होगया है! सेवा करते-करते उसकी ग़रीब माँ को भी छूत लगी—और, उसे भी दुष्ट हैज़े ने घेर लिया। गाँवों में अज्ञान और दरिद्रता का अखण्ड साम्राज्य रहता ही है। बीमार अपने सौभाग्य से बचें तो भले ही बचें, मगर वहाँ उनके लिए कोई दूसरी आशा नहीं। अस्तु। पड़ोसियों की देख-भाल से कहिए, या अपने सौभाग्य से कहिए, मुकुन्दन तो

किसी तरह बच गया। मगर, उसकी माँ ने आजतक किसीको अपनी बीमारी का पता नहीं चलने दिया। आखिर जब वह उसे छिपा ही न सकी, तब लोगों को खबर हुई; लेकिन, अन्त में, तब कोई कर ही क्या सकता था?

एक बार वायु के प्रकोप में चिल्लाकर वह उठ बैठी, 'मेरे लाल! मेरे बेटे! तुझे अब कौन देखेगा?' और, फिर गिरकर बेहोश हो गई। कुछ देर बाद, उसके प्राण-पखेरू प्रयाण कर गये! मुकुन्दन अनाथ हो गया।

६

पन्द्रह साल बीत गये हैं। अब तो उन पुराने घटना-स्थलों को ढूंढ निकालना भी मुश्किल होगा। बेलमपट्टी तो प्रायः उजड़ ही गई है। मंदिर के पुजारी के घर को छोड़कर ब्राह्मणों का टोला तो प्रायः रहा ही नहीं है। चेरी भी आधा उजाड़ होगया है।

मरी और चिन्नन अपने मां-बाप के साथ सिलोन में बढ़ते गये। मरी के बाप ने सिलोन आने के कुछ ही दिनों बाद फिर शराबखोरी शुरू कर दी थी। कुछ दिनों बाद वह नौकरी से हटा दिया गया। फिर अपनी औरत से

झगड़ कर वह सारे सिलोन में भीख माँगता फिरा। उसके बाद कोई नहीं जानता कि उसका क्या हुआ। मरी और चिन्नन सिलोन के एक चायबागान में अपनी माँ के साथ काम करते रहे। उन्होंने अपना चाल-चलन ठीक रक्खा। मरी अब २५ साल का जवान हो चुका था। उसकी माँ ने उसी बागान के किसी दूसरे कुली की लड़की से उसका विवाह ठीक किया। विवाह हो भी गया। विवाह होने के कुछ ही दिनों बाद मरी ने फिर घर लौटने की बात शुरू की। वह बोला—

'माँ, आखिर हम लोग किसलिए इस परदेश में अपनी जान देते रहें? यहाँ हमें न घर है, न द्वार; न कोई धर्म है, न ईमान; देवता और परमात्मा का तो यहाँ कोई नाम ही नहीं जानता, और न किसीकी जिन्दगी ही का यहाँ ठिकाना है! यहाँ तो हम सभी गोरू बैल जैसे गोल बाँधकर रहते हैं। मेरा मन तो घर जाने पर लगा हुआ है। अब अपने पास कोई दो सौ रुपये भी जमा होगये हैं। चलो, घर लौट चलें। घर चलकर दो गाय खरीद लेंगे, या एक जोड़ी बैल और एक गाड़ी खरीद लेंगे, और उसी-

से गुज़र चलाते जायेंगे। देश में तो सैकड़ों आदमी उससे भी कम में खुशी से रहते हैं।

माँ बोली, 'हाँ बेटा, चलो, चलें। मैं भी अपनी उसी कुटिया में मरना चाहती हूँ।'

सलाह पक्की होगई। कुलियों का जो पहला जत्था इसके बाद घर लौटा, उसके साथ ये लोग भी लौट आये। मरी ने एक जोड़ी बैल और एक गाड़ी खरीद ली।

पर दुर्भाग्य भी सिर पर आ खड़ा हुआ। दो दिनों बाद एक बैल लंगड़ाने लगा। पीछे मालूम हुआ कि बैल खरीदने में मरी ठगा गया है। अब वह उसे बेच भी नहीं सकता था। फिर उसने एक और बैल खरीदा। मगर उसके बाद ही ढोरों की कोई बीमारी शुरू हुई जिससे मरी के तीनों बैल मर गये! अब उसने गाँव के किसी किसान के यहाँ नौकरी करली। उसके लिए अपने परिवार का भरण-पोषण मुश्किल होगया, मगर किसी तरह वह गुज़र चलाये ही जाता था। चिन्नन उससे झगड़ कर मलाया टापुओं की ओर मजदूरी करने चला गया।

मगर मरी को अपनी स्त्री पूवी से सुख था। वह थी

तो १५ साल की ही लड़की, मगर होशियार, मिहनती और धीर इतनी थी कि २५ साल की औरत के बराबर काम करती थी। जब उसे फुर्सत मिलती, वह जंगल की ओर निकल जाती और थोड़ी लकड़ी चुन लाती, मैदानों में जाकर गट्ठर घास छील लाती, और बाजार में उन्हें अच्छे भाव से बेच आती। उसके सौभाग्य से उसे दाम भी पूरे मिल जाते थे। इस तरह वह एक हफ्ते में दो-तीन बार दो-दो आने पैसे लाकर घर-खर्च में सहायता पहुँचाती। किसी तरह चूल्हा जलता रहा।

इस साल बेलमपट्टी की बुरी हालत है। वर्षा तो बिलकुल हुई ही नहीं। सच पूछो तो चार साल से वहाँ सूखा पड़ता आ रहा था, मगर इस साल तो अति होगई। क़रीब-क़रीब सभी कुँए सूख गये। सिर्फ़ खेती ही नहीं सूखी, बल्कि पोने के लिए भी पानी मिलना मुहाल होगया। कितने लोग तो घर-बार छोड़ कर रोजी के लिए परदेश में भागे। मगर मरी और उसकी स्त्री कहीं जा भी नहीं सकते थे, क्योंकि बूढ़ी माँ हिलने को भी तैयार नहीं थी। वह कहती, कि 'मुझे यहीं मरने दे, बेटा! यह तो मरियाईदेवी

का कोप है न ? तब यहाँ रहो या कहीं भाग जाओ, देवी छोड़ेगी थोड़े बेटा, उसका दण्ड तो भोगना ही पड़ेगा।"

सिलोन से लौटने के बाद से ही बूढ़ी को पुराने दिनों की याद हो आई। और वह बराबर यही सोचा करती थी कि उसकी सारी विपत्ति का कारण वही पाप है, जो उसके लड़कों ने ब्राह्मण के घर में घुस कर किया था।

वह दिन-रात मरयाई देवी के आगे नाक रगड़ती रहती, मन ही मन देवी से चिरौरी-विनती करती रहती और बोलती रहती, "आखिर तुम उस अभागी ब्राह्मणी के घर गये ही क्यों ? यह बड़ा भारी पाप है, बेटा !"

अब वेलमपट्टी की चेरी, या अछूतों के टोले, में गिन-गिनाकर केवल पाँच अछूत परिवार रह गये थे। बाक़ी सब कहीं पर किसी तरह पेट पालने के लिए भाग गये थे। चेरी का तालाब तो न जाने कब का सूख गया था। अब वे पड़ोस के एक वल्लाल के खेत के कुँए से पानी लाते थे। एक इसी कुँए में थोड़ा पानी बचा था। मगर कुँए में वे अपने बरतन तो डुबा नहीं सकते थे, क्योंकि परिया के बरतन से कुँए पानी अशुद्ध जो हो जाता ! दिन-भर के खर्च के

लिए गाँव वालों के लिए पानी खींच लिये जाने तक वे बेचारे खड़े रहते। फिर बैल छुड़ाये जाते, पानी पिलाकर नहलाये जाते, और तब नाली में बहता हुआ पानी अछूतों को लेने दिया जाता था। फिर उस महामूल्य पानी के लए अछूत स्त्रियों में झगड़ा-तकरार, गाली-गिलौज, सभी बातें होतीं। कभी-कभी कोई औरत झगड़े में नाराज़ हो कर सारा-का-सारा पानी गदला कर देती और तब दूसरी औरतें किसानों से इसका फ़ैसला करने को कहतीं। और उसका जवाब क्या मिलता? यही कि, "छि: ! अरे यही तो अछूतों का ढंग है।"

७

कुट्टी गोन्दन के लड़के खेत में सोये हुए थे। खेत में कोई फ़सल अगोरने को थी ही नहीं, मगर अधभूखे गोरू और पानी सींचने का मोट और रस्सियाँ थीं, जो चोरी जा सकती थीं। सूनसान रात थी। कहीं कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती थी। ऊपर आकाश में चन्द्रमा झकाझक चमक रहा था। वे सूखे हुए खेत भी चाँदनी में सुन्दर ही दिखाई पड़ते थे।

अचानक कुत्ते भोंक उठे। उधर दूर पर कुँए से कुछ लेकर पेड़ की आड़ में जाती हुई परछाहीं-सी कुछ दिखलाई पड़ी।

कुट्टी का छोटा लड़का बोल उठा, "कौन है ? चोर, चोर ! "

बड़ा लड़का सेनगोडन नींद में ही पड़ा-पड़ा पूछने लगा, "क्या है ? "

पहला लड़का चिल्ला उठा, "हो काका, हो रकिया, गोनडा, हो वाज़ती, चोर-चोर ! डोल लेकर भागा जाता है। पकड़ो, पकड़ो। चोर-चोर !" फिर तो सभी ओर से मानो आसमान ही फट पड़ा। पास के खेत में से लोग उठ पड़े और हाथ में जो लाठी-सोटा मिला, लेकर दौड़ पड़े। कुत्ते भी मैदान मारने को भोंकते हुए दौड़े आये।

चोर तो सहज ही पकड़ा गया ! चोर औरत थी। वह पानी की चोरी करने आई थी ! वह डोल और रस्सी लेकर आई थी, और उसने कुँए में से पानी भर लिया था।

कुट्टी के लड़के चिल्ला उठे, "हो, इसने कुँए में अपना डोल डाल दिया था, मारो अभागी को ! मारे लातों के

कचूमर निकाल दो। बस, वहीं मार डालो। तोड़ो, इसका डोल फोड़ डालो। इसकी हड्डी-पसली तोड़ डालो। सत्यानाशी ने कुँआ ही अशुद्ध कर डाला!"

डोल तो पलक मारते ही टुकड़े-टुकड़े होगया और उसपर लात-मुक्के बरसने लगे। बेहोश होकर वह जमीन पर गिर पड़ी।

रकिया को कचहरी के मामले का कुछ पता था। वह बोला, 'छोड़ो-छोड़ो, देखो वह मर गई। अब मत मारो। बस, तुरत ही एक गढ़ा खोदकर इस सुअर को गाड़ डालो, जिसमें फिर कोई तरद्दुद न हो।

इससे उन क्रोधान्धों के होश-हवास कुछ सम्हले।

एक बूढ़े ने पूछा, 'यह कौन है? किसी को पता है?'

कुट्टी का बड़ा लड़का बोला, 'यह तो कैन्डी मरी की औरत है। ऐसे तो बेचारी भली लड़की है, मगर न जाने उसने यह पाप क्यों किया?'

छोटा लड़का बोला, "कल हमने उन्हें पानी लिये बिना ही लौटा दिया था। तभी तो शैतानों ने यह बदमाशी की।"

एक आदमी ने कहा, "बस, सब फ़साद धर्म का है;

सभी अच्छा है और सभी बुरा है।"

एक और बोल उठा, 'अरे, वह मरी नहीं है! बहाना किये हुए है। लगाओ न एक लात और देखो किस तरह चट से उठ कर भाग जाती है।' यह कहकर उसने अपनी सलाह आप ही मान ली और उसे एक लात जमाई। बेचारी लड़की हिली तो जरूर, मगर चट से उठकर भाग न सकी। लातों पर लातें बरसती रहीं, मगर वह बेहोश पड़ी रही।

रकिया ने कहा, "उठाओ ससुरी को चेरी में फेंक आओ"

इसपर तीन-चार आदमियों ने उसके छिटके हुए, बिखरे शरीर को बटोरकर उठा लिया और उसे चेरी में ले गये।

८

अगर अनाथ लड़कों की सच्ची कहानी लिखी जाय तो उसे पढ़ने से लाभ ही होता है। हम सभी अभाग्य के पंजे में नहीं पड़ते, मगर अपनेसे अधिक दुःखी के अनुभवों से बहुत कुछ लाभदायक बातें सीख सकते हैं। मुकुन्दन की माँ के मरने के बाद की उसकी जीवनी बड़ी ही रोचक

और शिक्षाप्रद होगी । मगर उसने आप तो उसे नहीं लिखा और अब दूसरे-तीसरे आदमी से सुनी-सुनाई बातें लिखने में कोई मजा नहीं है । इतना ही कहना यथेष्ट होगा कि अब वह पढ़-लिख कर डाक्टर बन गया था और कमालपुर के अस्पताल का डाक्टर था । उसने दुनिया घूम-घूम कर खूब देखी थी । अनाथ लड़कों को यह बड़ा ही होता है कि वे बहुत कुछ भूगोल तो अपने आप ही देख कर सीखें ।

एक दिन चार हट्टे-कट्टे आदमी कन्धे पर एक खटिया लिये अस्पताल में आये । उन्होंने अपना बोझ सामने सहन पर धीरे से उतारकर रख दिया । फिर वे पुकारने लगे—'स्वामी, स्वामी !' उनके स्वर में यह बात थी, जिससे लोग समझ जायँ कि बाहर कोई अछूत खड़ा चिल्ला रहा है

डाक्टर मुकुंदन अपना बहीखाता लिख रहे थे । उन्हें अपनी सालान रिपोर्ट के लिए सालाना हिसाब जल्दी तैयार करना था । लिखते ही लिखते डाक्टरसाहब अस्पताल के नौकर से बोले, "यह क्या है मुथा ? देख आ कि कोई मुर्दा तो नहीं आया है ।"

गाँव के स्कूल के हैडमास्टर साहब भी टहलकर गप लड़ाने चले आये थे। उनसे डाक्टर मुकुंदन बोले, 'जनाब, पूछिए मत। यह जगह भी न जाने कैसी बुरी है कि तक़रीबन हर हफ्ते यहाँ एक न एक खून होता ही रहता है, और मुझे मुर्दे की चीर-फाड़ करके परीक्षा करनी पड़ती है।'

हेडमास्टर ने, जो कि तंजोर ज़िले के थे, कहा, 'इस ज़िले की रैयत बड़ी ही असभ्य और झगड़ालू है। बस, बात-बात में झगड़ पड़ते हैं, और फिर मार-पीट, खून-खराबी होनी ही चाहिए। जबतक इनमें प्राथमिक शिक्षा का और प्रचार नहीं होता, सुधार की कोई आशा नहीं है।'

मुथा आकर बोला, 'मुर्दा नहीं है साहब! एक लड़की है, जिसे लोगों ने बहुत मारा-पीटा था।'

मुकुंदन ने कहा, "यहाँ टेबुल पर लाने को कहो।"

हेडमास्टर ने हँसते हुए कहा, 'जान पड़ता है कि कोई प्रेम-काण्ड है।"

'हो सकता है। खैर, चलकर देखें।'

वे लोग लड़की को चारपाई पर से उठाकर टेबुल पर लाये।

डाक्टर ने चोटों को देखते हुए कहा, "बड़ी बुरी तरह मारा है।" और जगह की चोटें तो साधारण थीं; मगर दोनों बाँहों की हड्डियाँ चटक गई थीं।

उसे लाने वालों में मरी भी था। वह पूछने लगा, "क्या यह बच जायगी ?"

मरी की आँखों में आँसू भर आये। वह फिर-फिर पूछने लगा, 'स्वामी, यह मेरी औरत है, क्या यह जियेगी ?'

"हाँ, हाँ, वह बिलकुल अच्छी हो जायगी। अस्पताल में एक महीना रहना होगा।"

इसपर मरी रोने लगा, "हाय, एक महीने तक मैं कैसे गुजर करूँगा ? खाने को कहाँ से लाऊँगा ?"

'मूर्ख कहीं का ! चुप रह। हम लोग उसे खाना देंगे, तू फिक्र न कर।'

मरी का एक साथी बोल उठा, "मरी, तुम नहीं जानते हो ? यह डाक्टर साहब हमारे अपने ही गाँव के ऐय्या, सेनय्या के लड़के तो हैं। हमारी रक्षा करेंगे। उसे चंगा कर देंगे।"

दूसरे ने कहा, "हाँ, हाँ, उसे खाना देंगे और जबतक

वह बीमार है तुम्हें भी खिलावेंगे। डरो मत !"

फिर तीनों चिल्ला उठे, 'ना, डर क्या है, ये तो हमारे ही स्वामी हैं न ?'

मरी ने मुकुंदन के चेहरे में आँखें गड़ाकर देखा।

उसने पूछा, 'स्वामी, क्या आप मुकुंदय्या हैं ?'

डाक्टर ने लडकी की बाँह की परीक्षा करते हुए कहा, "हाँ, हाँ।"

हेडमास्टर ने कहा, "डाक्टरसाहब, नमस्कार ! आज आपके हाथ में जरा मुश्किल काम आया है। इस समय बाधा देनी ठीक नहीं है। मैं जाता हूँ।"

"अच्छा, नमस्कार !"

फिर मुकुन्दन ने मरी से पूछा, "क्यों झगड़ा क्या था, भाई ? कहो तो, बात क्या हुई थी ?"

फिर सबके सब एक ही साथ इस तरह बोलने लगे कि मुकुंदन को उनकी बात समझने में बडी कठिनाई पड़ी।

९

डाक्टर मुकुन्दन मन-ही-मन कह रहे थे—

'यह तो आश्चर्य-जनक है ! मैं जब कभी इस बेचारी

लड़की के पास आता हूँ, मेरी माता के लगाये फूलों की उस सुगन्ध से मन भर जाता है !'

पाठको, क्या आपको भी कभी यह अनुभव हुआ है कि बरसों पहले के सूँघे हुए किसी फूल की सुगन्ध, या बचपन के सुने हुए किसी गीत की तान एकबार याद आ जाती है, नाक में मानों वह गंध भर जाती है, कानों में वह गीत गूँजने लगता है, और मन में उसके साथ की सारी स्मृति—सारी कथा—याद आ जाती है, आँखों के आगे वह सारा दृश्य घूमने लगता है, प्राणों में वही बात भर जाती है ? और इसका कोई कारण भी नहीं बतलाया जा सकता।

मुकुन्दन ने प्रेम से उसके घाव धोये, कपड़ा बाँधा और पट्टी ठीक कर दी। फिर पूछा, 'कैसा जी है ?'

पूवी बोली, "मैं अब बहुत अच्छी हूँ स्वामी ! भगवान् आपका भला करे, आपको सब सुख मिले !"

डाक्टर को आशीर्वाद देते समय उसके मुँह से जब ये शब्द निकले, उसकी आँखों में वह चमक दिखलाई पड़ी, जो माता की वात्सल्य-दृष्टि में होती है।

मुकुन्दन उसके पास से जाते हुए मन-ही-मन सोचने

लगे, "क्या मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ? इस लड़की को देखते ही मुझे माँ का इतना अधिक खयाल क्यों आने लगता है?"

"सुथा, क्या तुमने कहीं से कुछ फूल चुनकर रक्खे हैं?"

"नहीं, साहब, यहाँ कहीं फूल वूल नहीं हैं। अपने-तो सभी फूल-पौधे पानी बिना सूख गये।"

मुकुन्दन की माता फूलों से बहुत प्रेम करती थी। विधवा होने के बाद वह जूड़े में फूल तो लगा नहीं सकती थी, मगर वह तब भी फूल रोज ही चुनती और पूजा में उन्हें रक्खा करती थी।

मुकुन्दन बार-बार अस्पताल में पड़ी हुई उस लड़की की ओर जाया करते थे।

"ग़जब की बात है। मेरे दिमाग़ से तो उन फूलों की सुगंध निकलती ही नहीं है। लोग कहते हैं कि जब कोई मरता है तो मरने के साथ ही वह खत्म नहीं हो जाता बल्कि उसका जन्म फिर होता है। कौन जानता है कि यह अछूत लड़की दूसरी देह में मेरी माँ ही न हो?" ये

शब्द मन ही मन कहते हुए मुकुन्दन उसके मुँह की ओर बड़े गौर से ताकने लगे। वह सोई हुई थी। उनके मनमें यह खयाल जम गया। उन स्वर्गीय फूलों की सुगन्ध और भी स्पष्ट आने लगी। मुकुन्दन तो अब मानों फिर से लड़के बन गये।

१०

मुकुन्दन प्रायः बिस्तर पर पड़ने के बाद तुरन्त ही सो जाया करते थे। किसी संन्यासी से उन्होंने यह विधि सीखी थी कि सोने के समय आनेवाले भिन्न-भिन्न विचारों को किस तरह भगाकर नींद बुलाई जाय। मगर आज तो उस विधि से काम नहीं चला। उनकी आँखों के सामने अपने बचपन के सभी दृश्य नाच उठे। सोने की लाख कोशिश करते, मगर वे विचार पीछा छोड़ते ही नहीं थे। बिस्तर में एक घण्टे तक करवटें बदलते रहकर आखिर वह उठ पड़े और लैम्प जलाकर पढ़ने बैठे। हाथ में गीता पड़ गई। यह प्रति किसी मित्र की भेंट थी, जो अब जिन्दा नहीं था। उनकी नज़र इन पंक्तियों पर पड़ी—

वांसांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

ये पंक्तियाँ तो अनेक बार की पढ़ी हुई थीं, मगर तोभी आज इनमें एक नया ही अर्थ झलकता था—नई ही बात मालूम पड़ती थी ।

मुकुन्दन ने सोचना शुरू किया, "हाँ, ठीक तो है। कैसे कोई युवक और सबल आत्मा शरीर के मरते ही आप भी अचानक मर जायगी, नष्ट हो जायगी? ना, यह नहीं हो सकता ।"

सोचते सोचते, मुकुन्दन को अपना भान ही नहीं रहा। उन्होंने मन-ही-मन बोलना शुरू किया, 'हाँ, मगर पुराना शरीर छोड़ने के बाद आत्मा कौनसा नया शरीर धारण करेगी? इसका निश्चय तो केवल उसके भले-बुरे कामों से ही हो सकेगा। जब कभी कोई दुःखी प्राणी, आदमी या पशु दिखलाई पड़े, जहाँतक शक्ति हो, उसका दुःख कम करने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि, कौन जानता है कि हमारा अपना ही कोई प्रिय जन, भाई, बाप, माँ, पत्नी या लड़का, जिसके लिए हम विलाप कर रहे हैं, अपने पापों

के लिए उस देह में कष्ट नहीं भुगत रहा है? जब किसीको बहुत सुख मिले, सभी तरह के भोग मिलें, तब उससे हम ईर्ष्या ही क्यों करें? क्या पता कि हमारा ही वह कोई प्रिय संबंधी है, जो अपने पुण्यों का फल भोग रहा है? अगर यह हम जान जान जायँ, तो फिर हमारे हृदय सुख से भर जायँ, न कि ईर्ष्या से?"

उन्हें पता भी न चला और यों सोचते ही सोचते वह सो गये।

११

मुकुन्दन की माँ भोजन बना रही थी। "मुकुन्दन बेटा, उठ जल्दी तैयार होजा। देख दिन कितना चढ़ उठा है।"

"अरे, इसमें तो भूल हो ही नहीं सकती। शंका की जगह कहाँ है? यह तो हूबहू बिलकुल माँ का ही स्वर है। तब इतने दिनों तक यह क्यों सोचता रहा कि माँ मर गई, चली गई? माँ तो यहाँ जिन्दा है, बुला रही है। तब तो यह एक बुरा-सा स्वप्न-भर ही था कि माँ मर गई, मैंने तो इतने कष्ट उठाये, दुनिया-भर मारा-मारा फिरा!"

मुकुन्दन ने मन-ही-मन उपर्युक्त बातें कहीं। फिर वह सोचने लगा, "अहा, क्या ही आनन्द है। अब मैं फिर कभी माँ को छूत लगाकर बीमार नहीं पड़ने दूँगा, और मरने नहीं दूँगा।"

× × ×

अचानक दृश्य बदलने लगा। वह किसी तरह से डाक्टर बन गया था, पर माँ तो उसकी वही छोटे लड़के की विधवा माँ बनी रही। माँ ने उसे पुकारा और चेरी की ओर दौड़ पड़ी। मुकुन्दन पहले झिझका। समझ ही न सका कि माँ क्या कहती है। पर वह तो दौड़ती ही गई। दौड़ते-दौड़ते वह आँखों से ओझल हो गई।

वह रात को चेरी में घुसी थी और लोगों ने उससे बिगड़कर उसे खूब मारा, उसकी हड्डियाँ-हड्डियाँ छिटका दीं। फिर चार लम्बे आदमी उसे चारपाई पर सुलाकर लाये।

\+ + +

दृश्य फिर बदला। इस बार वह लड़का था। वह दर्द से परेशान चारपाई पर पड़ा-पड़ा छटपटा रहा था। उठने

की ताक़त नहीं थी। लोगों ने कहा कि इसे हैज़ा कहते हैं। उसने "माँ, माँ!" कई बार पुकारा, मगर माँ पास नहीं आई। फिर चार आदमी धीरे से आये और बाँस की अरथी पर उसकी माँ को बाँध कर उठा ले गये। वह चीख़कर जाग पड़ा।

× × ×

हाथ से गीता गिर पड़ी थी। डाक्टर मुकुन्दन आराम कुर्सी पर ही लेटे-लेटे सो गये थे। यह तो स्वप्न था। कुर्सी पर से उठकर वह बिस्तर पर जाकर सो गये।

१२

मुकुन्दन ने पूत्री की सेवा बड़ी कोमलता से, बड़े प्रेम से, की। एक महीने में वह अच्छी हुई। अब अलग होना बड़ा मुश्किल हो गया।

मुकुन्दन बोले, "मरी भैया, तुमसे मुझे एक बात कहनी है।"

मरी ने जवाब दिया, "क्या स्वामी?"

"हमारे बचपन में तुमने मुझे बंदर के हाथ से बचाया था और बदले में मेरी माँ से मार खाई थी।"

मरी ने कहा, "हाँ, कोई ऐसी ही बात हुई तो थी, किन्तु स्वामी, यह तो बहुत पुरानी बात है। आपने तो अब मेरी औरत की जान बचा दी है, और मैं पुरानी बातें याद भी नहीं रखता।"

"मरी क्या, तुम जानते हो कि लोग मरने के बाद अपने पाप और पुण्य के फल भोगने के लिए फिर से जन्म लेते हैं?"

"हाँ, स्वामी, यही होता है। भगवान् बहुत बड़े और न्यायी हैं।"

"मेरी माँ ने तुम्हें बहुत तकलीफ दी थी और शायद इस पाप के लिए वह कष्ट सह भी रही है। मैं उसके लिए कुछ प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ। माँ बाप के पापों के लिए प्रायश्चित्त करना तो बेटे का धर्म ही है। क्या तुम और तुम्हारी पत्नी मेरे साथ मेरे भाई और बहन बनकर रहोगे? तुम्हारे लिए तो ये दिन मुश्किल के हैं ही और मैं तुम्हारा पालन सहज ही कर सकता हूँ।"

"यह कैसे होगा, स्वामी? अगर काम दीजिए, तो

मैं काम कर सकता हूँ; मगर भला हमारे जैसे अधम पशु तो स्वामी के भाई बहन कैसे होंगे ?"

"यह सच है, मरी, कि कभी-कभी तुम लोगों के साथ कुत्तों के समान या उससे भी बुरा व्यवहार होता है। मगर हम लोग तो यह बड़ा भारी पाप कमा रहे हैं।"

"मैं ये सब बातें नहीं समझता, मैं तो मूरख अछूत हूँ, स्वामी।"

"खैर, तुम्हें, तुम्हारी स्त्री और माँ को मेरे साथ रहना ही होगा।" मुकुन्दन ने जोर देकर कहा।

मरी हँसते हुए बोल उठा, "मेरी माँ! ना, स्वामी, ना, वह इस तरह नहीं फँसेगी!"

सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर

की

मुख्य-मुख्य पुस्तकें

दिव्य जीवन—

जीवन यह के प्रभात में ही सांसारिक चिन्ताओं के भार से कुम्हलाने वाले युवकों के लिए संजीविनी विद्या है। कुसंगति में भटकने वाले युवकों को सन्मार्ग बताने वाला गुणमन्त्र है।

जीवन-साहित्य—(काका कालेलकर)

प्राचीनता और नवीनता में बराबर संघर्ष चला आया है। कोई प्राचीन संस्कृति में एकान्त सौंदर्य और श्रेष्ठता का दर्शन करता है और कोई पश्चिमी सभ्यता का ही अनन्य भक्त है। काका साहब ने इस पुस्तक में दोनों संस्कृतियों का अद्भुत समन्वय कर दिया है। पुस्तक का प्रत्येक अध्याय पवित्र ज्ञान और आल्हाद का देने वाला है।

तामिल वेद—(अछूत ऋषि तिरुवल्लुवर)

हम आर्यों के भारतवर्ष में आने के पहले इस देश में द्रविड़ नामक एक महान् जाति निवास करती थी। उसकी संस्कृति भी अत्यन्त उच्च थी। अत्यन्त चमत्कार पूर्ण और प्रसन्न भाषा में उसके सार सिद्धान्त अछूत ऋषि तिरुवल्लुवर ने ग्रथित कर दिये हैं। द्रविड़ देश में इस पुस्तक का वेदों के समान आदर है। केवल भारत में ही नहीं समस्त विश्व साहित्य में इसका एक विशेष स्थान है।

शैतान की लकड़ी—

सारी दुनिया पागल हो रही। एक चीज को बुरी समझ कर भी

जब आदमी उसका सेवन करता रहे, उसका गुलाम बन जाय तब उसे क्या कहें। सारा संसार नशीली चीजों के पंजे में बुरी तरह फंस गया है। शराब, भांग, गांजा, तमाखू तथा व्यभिचार के कारण भारत की क्या दशा हो रही जरा इस पुस्तक को पढ़ कर देखिए।

सामाजिक कुरीतियां—

मानवता अपनी ही बनाई कुछ बुराइयों के भार से पिस रही है। दुखसागर में डूबी हुई मानवता ऊपरी बातों को दूर करने से नहीं उबारी जा सकती। उसके लिए तो धर्म, नीति, कानून, विवाह, पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, इन सबकी रूढ़ कल्पनाओं में समूल परिवर्तन की जरूरत है। इस पुस्तक में टॉल्स्टॉय अपनी जोरदार वाणी में इन सारी बुराइयों को प्रकट करते हैं।

भारत के स्त्री रत्न—

प्राचीन-भारतीय देवियों के आदर्शजीवनचरित का यह पवित्र, सुन्दर और प्रकाशमय रत्न है। यह रत्न प्रत्येक भारतीय बहिन के हाथ में होना आवश्यक है।

अनोखा—(The Laughing man)

सभ्यता और सुधार के ठेकेदार अंग्रेजों की जंगली अवस्था का नग्न चित्र! अंगरेजी राजाओं और उनके दरबारों की कुटिल क्रीड़ाओं का हाल विक्टर ह्यूगो की विकट व्यंग्यमय भाषा में पढ़िए।

आत्मकथा—(महात्मा गांधी)

यह वही विश्व विख्यात आत्मचरित्र है जिसके अभी-अभी तीन संस्करण हो गये हैं। उपन्यासों की भांति मनोरंजक और उपनिषदों की भांति पवित्र और ऊँचा उठाने वाला यह ग्रन्थ प्रत्येक भारतीय को अपने पास अवश्य रखना चाहिए।

यूरोप का इतिहास—

नवीन भारतीय जागृति में जो लोग सहायक होना चाहते हैं उन्हें यूरोप का इतिहास अवश्य पढ़ना चाहिए। उसमें एक नवीन सभ्यता का प्रयोग हो रहा है। हम भी नवीन संस्कृति का निर्माण करने जा रहे हैं। अतः हमें इसका अध्ययन विशेष ध्यान पूर्वक करना चाहिए।

समाज विज्ञान—

आज कल देश में समाज-सुधार सम्बन्धी नित्य नये प्रयोग हो रहे हैं। इनको ठीक तरह समझने के लिए तथा समाज के विकास का शास्त्र—समाज विज्ञान पढ़ना बहुत लाभदायक है।

खद्दर का संपत्तिशास्त्र—

खादी के नाम पर चिढ़ने वाले सज्जन इस पुस्तक को केवल एक बार पढ़लें। लेखक अमेरिका के एक अत्यन्त विद्वान शिल्पशास्त्री हैं और उन्होंने खादी की उपयोगिता और अनिवार्यता वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध की है।

गोरों का प्रभुत्व—

गोरों का प्रभुत्व अब संसार से धीरे-धीरे उठता जा रहा है। संसार की सवर्ण जातियां जागने लगीं और स्वतंत्र होने लगी। इस पुस्तक में देखिए कि किस तरह वे गोरों को अपने देशों से भगाती जा रही हैं।

चीन की आवाज—

चीन की वर्तमान क्रान्ति को समझने के लिए उनकी संस्कृति उनकी समस्याओं आदि का समझना बहुत जरूरी है लॉवेज डिकिन्सन ने पत्रों के रूप में चीन की समस्याओं को अत्यन्त आकर्षक ढंग से समझाया है।

दक्षिण आफ्रिका का सत्याग्रह (दो भाग)

महात्मा गांधी ने इस महान युद्ध का इतिहास स्वयं लिखा है सत्याग्रह के जन्म उसके सिद्धान्त आदि को अब प्रत्येक भारतवासी को समझ लेना चाहिए।

विजयी बारडोली—

बारडोली के वीर किसानों ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जो महान शान्तिमय युद्ध छेड़ा था उसका यह अत्यन्त स्फूर्ति जनक इतिहास है।

अनीति की राह पर—

ब्रह्मचर्य, संतति निरोध स्त्री पुरुषों को किस तरह पवित्रता

पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए इत्यादि पर बड़े ही रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से महात्माजी ने अपने विचार रक्खे हैं। पुस्तक अत्यन्त लोक प्रिय है। पहला संस्करण हाथों हाथ बिक गया। दूसरा छप रहा है।

नरमेध !—

स्वाधीनता की रक्षा के लिए मरने वाले उच्च नागरिकों के आत्मयज्ञ का इतिहास अद्भुत वीरता और स्वदेशी शासकों के रोमांचकारी अत्याचारों की क्रूर कथायें जिनके सामने रावण और मेघनादों की क्रूरता सात्विक नजर आने लगती है। शकुनी और दुर्योधन साधु पुरुष प्रतीत होते हैं। महाकाल का भैरव नृत्य—नरमेध ! पढ़िए।

जब अंग्रेज आये—

भारत में अंग्रेजी राज्य के संस्थापक क्लाइव की धोखेबाज़ी और कम्पनी बहादुर की कुटिलताओं की कहानी श्री अक्षयकुमार मैत्रेय लिखित इस पुस्तक में पढ़िए तो ? कि अपने मुँह न्याय के ठेकेदार बनने वालों ने भारत में इस राज्य की स्थापना कैसे-कैसे विश्वासघात और नीचताओं पर की नींव पर की है।

जिन्दा लाश—(टॉलस्टॉय)

यौवन, धन, प्रभुत्व और अविवेक जहां होते हैं, वहां एक-एक भी अनर्थ कर डालता है। जहां चारों हों वहां तो परमात्मा ही रक्षा करें। अपनी अद्‌भुत शैली में टॉलस्टॉय ने इनके शिकार बने हुए युवकों और धनिकों का बड़ा ही-ब.दया खाका खींचा है।